हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

मार्च, 2004 वर्ष 3 अंक 1

ऐ लोगो !
जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल कर दिये गये यह न समझो कि वह मुर्दा हैं, बल्कि वह तो ज़िन्दा हैं, अपने रब के पास रोज़ी दिये जाते हैं:
(आले इमरान : 169)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० सरवर फारूकी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

विषय एक नज़र में

इस्लामी कैलेण्डर का पहला महीना	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी	6
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के उच्च	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी	7
त्याग और बलिदान का शान्दार उदाहरण	डॉ० मु० इज्तिबा नदवी	9
मुनाजात	मौ० मु० सानी ह़सनी	10
अपना एहतिसाब	इदारा	11
यह ईश्वर की माया है	इदारा	11
शैतान जादू से अपने रूप बदलते हैं	अबू मर्गूब	12
मानवता का मूल्य उसके गुणों से है	मुफ़्ती मु० ज़हूर नदवी	13
बच्चे गायें	रूबी लखनवी	14
अपने आमाल अल्लाह के हवाले कर देने....	हैदर अली नदवी	15
सलाह हाज़िर है	मु० वसीयुल्लाह हुसैनी	17
आपकी समस्याएं और उनका हल	मुह़म्मद सरवर फ़ारूकी नदवी	18
तअ़वीज़ व अ़मल्यता की गलतियां	ह़ज़रत थानवी	20
बच्चियों की तालीम व तर्बियत	ख़ैरुन्निसां बेहतर	21
क्रोध की वास्तविकता	शाह मुह़म्मद जाफर	23
गुलिस्तां बोस्तां	मु० हसन अन्सारी	25
सिल-ए-रहिमी	मुफ़्ती स० अ़ब्दुर्रह़ीम लाजपूरी	27
सय्यिदुना ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०)	तालिब हाशिमी	34
कुछ शहीदों की तारीख़े शहादत	इदारा	39
अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	मुईद अशरफ नदवी	40

□□□

मुहर्रम

इस्लामी कलेन्डर का पहला महीना

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

मुहर्रम हिज्री कलेन्डर का पहला महीना है। हिज्री कलेन्डर वह कलेन्डर है जिस का सम्बन्ध अल्लाह के अन्तिम रसूल (सन्देष्टा) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत से है। हिजरत का अर्थ है अपना देश छोड़ देना परन्तु इस का परिभाषिक अर्थ है, अल्लाह के लिए अपना देश छोड़ कर अलग जा बसना, जिस का विस्तार यह है कि अगर एक मुसलमान को किसी स्थान पर इस्लाम पर न चलने दिया जाए, इस्लाम के महत्वपूर्ण कार्यों में बाधा डाली जाए और मुसलमान वहां उन महत्वपूर्ण कार्यों के करने में असमर्थ हों तो ऐसे में अल्लाह का आदेश है कि वहां से हिजरत कर के किसी ऐसे स्थान पर चले जाएं जहां वह स्वतंत्रता पूर्वक इस्लाम पर चल सकें इस प्रकार जो मुसलमान इन कारणों पर अपना वतन छोड़ेगा वह अल्लाह की राह में मुहाजिर होगा। अब अन्तर्राष्ट्रीय विधान इस प्रकार का बन गया है कि हिजरत की आवश्यकता बहुत कम पड़ती है । अब तो किसी देश में कुछ लोगों पर जब अत्यधिक अत्याचार होता है तो वह हिजरत (देश त्याग) नहीं करते अपितु शरणार्थी बनकर दूसरे देश चले जाते हैं फिर कुछ समय उपरान्त अन्तर्राष्ट्रीय विधान के अंतर्गत दूसरे राज्यों की सहायता से अपने देश वापस आते हैं। फिर अब तो कोई देश दूसरे देश के लोगों को सरलता से अपनी नागरिकता भी तो नहीं देता है।

अल्लाह के अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब इस्लाम की दअ़वत दी तो मक्के के बहुत से लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और यह मान लिया कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासक नहीं है और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं। फिर तो मक्के के कुछ अनेकेश्वरवादी धनवान लोगों ने उन ईमान वालों को सताना आरम्भ कर दिया और सताने में अति कर दी तो अल्लाह के रसूल (स०) ने कुछ मुसलमानों को हिजरत का आदेश दिया, पहले कुछ लोग हब्शा गये, फिर कुछ लोग मदीना गये, और जब एक रात मक्के के इस्लाम विरोधियों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का घर बुरे इरादे से घेर लिया तो आप (स०) अल्लाह के आदेश से मदीने को हिजरत के इरादे से निकल पड़े। घिरे हुए घर से रात में निकलना एक चमत्कार (मुअ़जिज़ा) ही था। बल्कि हिजरत की यह पूरा यात्रा चमत्कार पूर्ण थी। हज़रत अबू बक्र इस यात्रा में साथ थे मदीने वालों ने आप (स०) का भव्य स्वागत किया।

आप (स०) की हिजरत के पश्चात ईमान वालों की हिजरत का तांता बन्ध गया। मदीने वालों ने दिल खोल कर उनको सहयोग दिया। यह हिजरत करके मदीना आने वाले, मुहाजिर (देशत्यागी) कहलाए और मदीने के जिन ईमान वालों ने उन को जगह दी और उनका समर्थन किया वह अन्सार कहलाए। यही हिजरत इस्लामी स्टेट का कारण बनी। सहाब–ए–किराम ने इस हिजरत को बड़ा महत्व दिया और परस्पर परामर्श से हिजरत के वर्ष से हिज्री कलेन्डर प्रचलित किया जिस का पहला महीना मुहर्रम नियुक्त हुआ। हिज्री कलेन्डर ही इस्लामी कलेन्डर है।

इस महीने का पहला दशक बहुत शुभ माना गया है। विशेषकर इसकी १० तारीख कि इस तारीख में अल्लाह ने अपने विशिष्ट भक्तों को अर्थात अपने नबियों और रसूलों को बड़े बड़े पुरस्कार

प्रदान किये हैं। इस दिन को आशूरा का दिन कहते हैं। कहते हैं कि दादा आदम अलैहिस्सलाम से जो भूल हो गयी थी, जिस के कारण वह जन्नत से इस धरती पर उतार दिये गये थे और वह अपनी चूक पर निरंतर रोते और क्षमा मांगते रहते थे, आशूरा ही के दिन रब ने उन को क्षमा देकर उच्च स्थान प्रदान किया था। इसी तिथि को नूह अलैहिस्सलाम का तूफ़ान थमा और उनकी नाव जूदी पहाड़ पर आ लगी तो नूह अलैहिस्सलाम और उनके अनुयायियों ने शान्ति तथा सन्तुष्टि की सांस ली। इसी तिथि को मछली ने यूनुस अलैहिस्सलाम को नदी के तट पर सुरक्षित उगल दिया था और वह अपनी क़ौम की ओर वापस आये थे। इसी तिथि में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए समुद्र में रास्ता बनाया गया था और उन्होंने अपने साथियों के साथ समुद्र पार कर लिया था इस प्रकार मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को फ़िरऔन के अत्याचारों से छुटकारा मिला था और फ़िऔन सेना सहित डूब गया था जबकि फ़िरऔन का शव संसार वालों को ध्यान देकर सीख लेने के लिए अल्लाह ने समुद्र से बाहर निकाल दिया था जो आज भी एक संग्रहालय में सुरक्षित है।

रिवायत में आता है कि जब अल्लाह के रसूल मदीना तैय्यिबा आए तो ज्ञात हुआ कि यहूदी लोग आशूरा के रोज़ रोज़ा रखते हैं। पूछने पर पता चला कि वह लोग अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए उस रोज़ रोज़ा रखते हैं कि उसी रोज़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को फ़िरऔन के अत्याचारों से छुटकारा मिला था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हम मुसलमान यहूदियों से ज़ियादा हक़ रखते हैं कि आशूरा के रोज़ रोज़ा रखें। अतएव आप (स०) ने स्वयं आशूरा का रोज़ा रखा और अपने सहाबा से रखवाया। फिर बअ्द में फ़रमाया कि अगले साल मैं जीवित रहा तो यहूदियों से अंतर के लिए १० तारीख़ से एक दिन मिलाकर दो दिन रोज़ा रखूंगा। इस लिए मुसलमान लोग १० तारीख़ को ९ या ११ तारीख़ से मिलाकर दो रोज़े रखते रहे परन्तु कुछ बड़े विद्वानों का कहना है कि अब यहूदियों में आशूरा के रोज़ों का चलन नहीं रहा अतः केवल १० मुहर्रम (आशूरा) के रोज़े में कोई हरज नहीं है। आशूरा का रोज़ा सुन्नत रोज़ों में से है। लगता है कि इन ही विशेषताओं के कारण सहाब–ए–किराम ने इस महीने को इस्लामी कलेन्डर अर्थात हिज्री कलेन्डर का पहला महीना नियुक्त किया।

इस सब के साथ इसी महीने में बल्कि इसके पहले ही दशक में कुछ दुख दायी घटनायें भी घटीं हैं।

खलीफ़–ए–सानी हज़रत अमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को २८ ज़िल्हिज्ज को ऐन नमाज़ की हालत में अबू लूलू मजूसी ने ख़ंजर मारा जिस से आप सख़्त ज़ख़्मी हुए और पहली मुहर्रम को शहादत पाई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

दूसरी दुखदायी घटना इस की १० तारीख़ अर्थात आशूरा ही के दिन घटी जब यज़ीदी सेना ने जिस का सरबराह उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद था अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवासे तथा सहाबी हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके ७२ साथियों को कर्बला के मैदान में शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। इस घटना से सारी उम्मत हिल गई, और दुख में डूब गई। इस घटना में हज़रत हुसैन (रज़ि०) के घर के लोगों में औरतें और मर्दों में केवल ज़ैनुलआबिदीन बच सके जो बीमार थे। उस समय उनकी आयु २२ वर्ष थी। यह सब लोग दमिश्क, यज़ीद के पास ले जाये गये। यज़ीद ने चाहे दिखावे ही के लिए किया हो खेद प्रकट किया और इन लोगों को सम्मान के साथ अपने घर ठहराया फिर सुरक्षा के साथ सबको मदीना मुनव्वरा भिजवा दिया। हज़रत ज़ैनुल आबिदीन को जीवन भर इस का दुख रहा परन्तु उन्होंने इस दुख दिवस की यादगार प्रचलित न की न उन्होंने, न उन के समय बल्कि उन के पश्चात कई सौ वर्ष

(शेष पृष्ठ ८ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

भलाई का हुक्म करना और बुराई से रोकना :–

अच्छी बात का हुक्म दो और बुरी बात से रोको। (लुक़मान : १७)

जिस चीज़ का अल्लहा ने हुक्म दिया वह अच्छी बात है और जिससे रोका है वह बुरी बात है। हम सब को अच्छी बातों का हुक्म करना चाहिए और बुरी बातों से रोकना चाहिए। अगर तुम्हारी वजह से लोग अच्छे काम करने लगें या बुराई से रूक जाएं तो अल्लाह तआला के यहां तुम को भी बराबर का सवाब मिलेगा।

नेकी का हुक्म करना और बुराई से रोकना भी एक प्रकार की नेकी है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से कोई किसी बुराई को देखे तो उस को अपने हाथ से रोक दे। अगर इतनी शक्ति न हो तो ज़बान से रोके। अगर इतनी भी हिम्मत न हो तो उसको दिल से बुरा समझे और यह ईमान का सब से कमज़ोर दर्जा है।

अगर हम लोगों को अच्छाई का हुक्म न करेंगे और बुराई से न रोकेंगे तो उसकी वजह से जो मुसीबतें (विपत्तियां) आएंगी हम उनसे बच न सकेंगे। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको एक मिसाल देकर इस प्रकार समझाया है कि अगर नदी में बड़ी नाव चल रही हो, मुसाफ़िरों में से कुछ लोग नाव के नीचे भाग में छेद करने लगें, कोई उनको न रोके तो परिणाम स्वरूप छेद द्वारा नाव में पानी भर जाएगा तो सभी लोग डूब जाएंगे। अगर दूसरे लोग छेद करने वालों को रोक देते तो खुद भी डूबने से बच जाते और दूसरों को भी बचा लेते।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो लोग शक्ति वालों और धनवानों के लिहाज़ में उनको बुराई से नहीं रोकते, और उनको अच्छाई का हुक्म नहीं करते अल्लाह तआला उनसे कहेगा कि तुम लोगों से डरते थे जबकि तुम को मुझ से डरना चाहिए था। पवित्र क़ुर्आन कहता है :

और बचो उस प्रकोप से कि तुम में से विशेषकर अत्याचारियों ही पर नहीं पड़ेगा। (अन्फ़ाल : २५)

ख़ुदा के हुक्म के बिना किसी पेड़ का कोई पत्ता नहीं हिल सकता मानव की क्या शक्ति कि उसकी सहायता के बिना कोई काम कर सके इस लिए अल्लाह का आदेश है कि कोई काम करना हो तो यूं न कह दिया करो कि मैं ऐसा कर दूंगा बल्कि यूं कहो कि इन्शा अल्लाह (अगर खुदा ने चाहा) कर दूंगा।

अच्छाई की ओर बुलाओ

अपने पालनहार की ओर लोगों का अक़्लमन्दी और अच्छी नसीहत के द्वारा बुलाओ और उनसे अच्छे ढंग से तर्क वितर्क (मुनाज़रा) करो। (नहल : १२५)

इस आयत में मुसलमानों को बतलाया गया कि वह अपने अल्लाह के दीन की ओर लोगों को तीन प्रकार से बुलायें : (१) हिक्मत (२) अच्छी नसीहत (३) भले ढंग से तर्क वितर्क।

जब हम किसी के सामने कोई नई बात लाते हैं तो साधारणतया तीन ढंग अपनाते हैं। या तो उस बात के प्रमाण में दिल में घर कर लेने वाले तर्क (दलीलें) प्रस्तुत करते हैं या सच्चे दिल से समझाते हैं। या यह करते हैं कि उसकी ग़लती उस पर प्रकट करते हैं।

पहले ढंग को हिकमत, दूसरे को अच्छी नसीहत और तीसरे का नाम अच्छे ढंग का मुनाज़रा (तक वितर्क) है। इस्लाम की शिक्षा यह है कि दीन में ज़बरदस्ती नहीं। ईमान यक़ीन का नाम है और यक़ीन किसी दिल में ज़बरदस्ती नहीं पैदा किया जा सकता है। ग़ौर करो कि मुसलमानों में सहाबा से बढ़कर ईमान व इस्लाम में कौन है? कोई एक सहाबी भी ज़बरदस्ती मुसलमान नहीं बनाया गया था, सब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अच्छी ज़िन्दगी देखकर और अच्छी बातों को सुनकर ईमान लाए थे। तुम भी आज अल्लाह के दीन का उसी ढंग से प्रचार कर सकते हो। रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मआज़ बिन जबल और अबू मूसा अशअ़री को यमन में इस्लाम की ओर लोगों को बुलाने के लिए भेजा तो विदा करते समय नसीहत फ़रमाई कि अल्लाह के दीन को आसान कर के प्रस्तुत करना सख़्त बनाकर नहीं लोगों को शुभ सूचना सुनाना घृणा न दिलाना। ●●●

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

अख़्लाक़ घर वालों के लिए भी ज़रूरी है –

२३२. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया मोमिनो में सब से ज़ियादा मुकम्मल ईमानवाला वह है जिस के अख़्लाक सबसे अच्छे हों, तुम में सब से बेहतर वह शख़्स है जो अपनी औरतों के साथ अच्छा व्यवहार करे। (तिर्मिज़ी)

मर्दों और औरतों के एक दूसरे पर हुकूक़ –

२३३. हज़रत अम्र बिन अल अहवस जशमी (रज़ि०) से रिवायत है कि हज्जतुल विदाअ़ में उन्होंने रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना, लोगो सुन लो तुम्हारा, तुम्हारी औरतों पर हक़ है, और तुम पर तुम्हारी औरतों का हक़ है। तुम्हारा उन पर यह हक़ है कि वह तुम्हारे बिस्तरों पर ऐसे शख्स को न बैठने दें जिसको तुम पसंद नहीं करते हो और तुम्हारे घर में ऐसे शख्स को आने की इजाजत न दें जिसको तुम ना पसंद करते हो सुन लो तुम्हारा, उन पर यह हक़ है कि तुम उनको अच्छा पहनाओ और खिलाओ। (तिर्मिज़ी)

रसूलुल्लाहि (सल्ल०) का फितरत के मुताबिक़ मामला–

२३४. हज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि हबशी नेज़ा बाजी (बल्लम बाज़ी) कर रहे थे रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने मेरे लिए आड़ फ़रमा लिया, और मैं देखती रही, और बराबर देखती रही। यहां तक कि मैं खुद ही चली आई, तुम अपनी नौ उमर बीवियों, नौ उमर लड़कियों के जज़बात का ख़याल रखो जो खेल तमाशों की दिलदादा होती हैं। (बुखारी)

जो अपने घर वालों के लिए बेहतर हो, वह सब से अच्छा है –

२३५. हज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुम में सबसे बेहतर वह शख़्स है जो अपने घर वालों के साथ हुस्ने सुलूक (अच्छा व्यवहार) करता है, ओर मैं तुम में से अपने घर वालों के साथ सब से अच्छा व्यवहार करने वाला हूं। (इब्ने माजी)

रसूलुल्लाहि (सल्ल०) की दिलदारी –

२३६. हज़रत आइशा (रज़ि०) से ही रिवायत है कि मुझ से रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने दौड़ में मुकाबला किया तो मैं आप सल्ल० से बढ़ गई। (अबू दाऊद)

२३७. हज़रत आइशा (रज़ि०) ही से रिवायत है कि मैं नबी करीम (सल्ल०) के जमाने में लड़कियों के साथ खेला करती थी मेरी कुछ सहेलियां थीं जो मेरे साथ खेला करती थीं तो जब रसूलुल्लाहि (सल्ल०) घर में तशरीफ़ लाते, तो वह घबरा कर अलग हो जातीं, आप (सल्ल०) उनको मेरे पास भेज देते और वह मेरे साथ खेलतीं।

हर शख़्स ज़िम्मेदार है और अपनी ज़िम्मेदारी पर जवाब देह होगा–

२३८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाहि (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना तुम में से हर शख़्स ज़िम्मेदार है और हर एक से उसकी ज़िम्मेदारी के बोरे में सवाल होगा हाकिम रअ़ीयत का ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछ होगी, मर्द ज़िम्मेदार है और उस से अपनी रअ़ीयत (मातहत) के बारे में पूछ गच्छ की जाएगी, औरत अपने शौहर के घर की ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में सुवाल किया जाएगा, खादिम अपने आक़ा के माल का ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी पर सवाल किया जाएगा। (बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत हसन (रज़ि०) को सदकः के खजूर खाने की मुमानिअ़त –

२३९. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि हज़रत हसन बिन अ़ली (रज़ि०) ने सदकः का एक खजूर उठा लिया और उसको मुंह में रख लिया रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया नहीं–नहीं इसको फेंक दो तुम्हों मालूम नहीं कि हम लोग सदकः का माल नहीं खाते हैं। (बुखारी, मुस्लिम)

खाने के आदाब –

२४०. हज़रत अम्र बिन अबी सलमा (रज़ि०) से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाहि (सल्ल०) की परवरिश में था मेरा हाथ पलेट में चारों तरफ़ जाता था।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

हज़रत मुहम्मद सल्ल० अलैहि वसल्लम के उच्च आचरण पर एक दृष्टि

मौ० सैयद अबुल हसन अली नदवी

"ह० मुहम्मद सल्ल० तमाम लोगों में सब से अधिक उदार नम्र तबीअत और खान्दानी लिहाज़ से सबसे अधिक आदरणीय हैं। अपने सत्संगियों से अलग थलग न रहते थे। उनमें पूरा मेल जोल रखते थे। उनसे बातें करते, उनके बच्चों के साथ खुशमिज़ाजी और विनोदप्रियता का आचरण करते, उनके बच्चों को अपनी गोद में बिठाते। गुलाम और आज़ाद, दीन दुखिया सब का निमंत्रण स्वीकार करते, बीमारों को देखने जाते चाहे वह बस्ती के छोर पर हो, क्षमाप्रार्थी को क्षमा करते। आप को सहाबा की मजलिस में कभी पैर फैलाये हुए नहीं देखा गया ताकि किसी को तंगी न हो। सहाबा एक दूसरे से कविता सुनते सुनाते और अज्ञानता की किसी बात का उल्लेख करते तो आप खामोश रहते या मुस्कुरा देते। आप अत्यन्त नर्म दिल मुहब्बत करने वाले और कृपालु थे। अपनी बेटी फातिमा से कहते, "मेरे दोनों बेटों (हसन व हुसैन) को बुलाओ।" वह दौड़ते हुए आते तो आप दोनों को प्यार करते और उनको अपने सीने से लगाते। आपके एक नाती को आप की गोद में इस हाल में दिया कि उसकी सांस उखड़ चुकी थी, तो आप की आंखों में आंसू जारी हो गये। ह० साद ने कहा, "या रसूलुल्लाह यह क्या है? आप ने फ़रमाया "यह दया है जो अल्लाह अपने भक्तों में जिसके दिल में चाहता है डाल देता है। और निःसन्देह अल्लाह अपने दयावान भक्तों ही पर दया करता है।"

जब बद्र के युद्ध में बन्धकों के साथ हज़रत अब्बास को भी बन्धक बनाया गया, और अल्लाह के रसूल ने उनकी कराह सुनी तो आप को नींद नहीं आयी। अब अंसार को यह बात मअलूम हुई तो उन्होंने अब्बास के बन्धन खोल दिये और इच्छा व्यक्त की कि उनको छोड़ दिया जाये लेकिन आपने इस बात को स्वीकार नहीं किया।

हमारे नबी बड़े शीलवान और मेहरबान थे। लोगों के स्वभाव में जो उक्ताहट होती है और मन के क्षणिक ठहराव का बराबर ध्यान रखते थे इसीलिए प्रवचन व उपदेश समयान्तर के साथ करते कि कहीं उक्ताहट न पैदा होने लगे। अगर किसी बच्चे का रोना सुन लेते तो नमाज़ संक्षिप्त कर देते। और कहते, "मैं नमाज़ के लिए खड़ा होता हूं तो इस विचार से नमाज़ संक्षिप्त कर देता हूं कि उसकी मां को तकलीफ न हो।"

आप कहते थे, तुम में कोई व्यक्ति मुझ से किसी दूसरे की शिकायत न करे इसलिए कि मैं चाहता हूं कि तुम्हारे सामने इस हाल में आऊं कि मेरा दिल बिल्कुल साफ़ हो। आप कहते, जिसने तर्के में माल छोड़ा वह उसके वारिसों का है, कुछ कर्ज़ आदि बाकी है तो वह हमारे ज़िम्मे। आप घर में आम लोगों की तरह रहते, हज़रत आइशा कहती है कि आप अपने कपड़ों को भी साफ़ कर लेते और अपना काम स्वयं करते। अपने कपड़ों में पेवन्द लगा लेते थे, जूता गांठ लेते थे। हज़रत आइशा से पूछा गया कि आप अपने घर में किस तरह रहते थे? उन्होंने उत्तर दिया, आप घर के काम काज में रहते थे जब नमाज़ का समय आता तो नमाज़ के लिए बाहर चले जाते। हज़रत अनस बयान करते हैं कि मैंने किसी व्यक्ति को अल्लाह के रसूल से अधिक अपने परिवार जनों के प्रति कृपालु व दयालु नहीं देखा।

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि० बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने किसी खाने में कभी ऐब नहीं निकाला। इच्छा हुई तो खा लिया, नापसन्द हुआ तो छोड़ दिया। वह आगे कहते हैं कि मैंने आप की दस साल सेवा की, आपने कभी "हूं" भी नहीं किया। और न यह कहा कि अमुक कार्य तुमने क्यों किया और अमुक कार्य तुमने क्यों न किया। आप के साथी आप के लिए इस विचार से खड़े नहीं होते थे कि आप इसको पसन्द नही करते थे। आप कहते कि, मेरी इस प्रकार आगे बढ़कर प्रशंसा न करो, जिस प्रकार ईसाइयों ने हज़रत ईसा अ० के साथ किया था, मैं तो एक भक्त हूं। तुम मुझे अल्लाह का भक्त और उसका रसूल कहो अदी बिन हातिम कहते हैं कि मैं जब आप की सेवा में उपस्थित हुआ तो आपने मुझ को अपने धर बुलाया। मैं गया तो आप की बांदी ने तकिया टेक लगाने के लिए पेश किया। आपने तकिए को मेरे और अपने दरमियान रख दिया और स्वयं ज़मीन पर बैठ गये। अदी कहते हैं कि इससे मैं समझ गया कि वह बादशाह नहीं हैं। एक व्यक्ति ने आपको देखा तो कांप गया। आप ने उससे कहा कि "घबराओ नहीं, मैं कोई बादशाह नहीं हूं। मैं कुरैश की एक महिला का बेटा

हूं। आप घर में झाड़ू दे लेते। आप के सामने हर व्यक्ति पूरे इत्मीनान से अपनी बात समाप्त कर लेता। ऊंट बांधते, उनको चारा देते और बाजार से सौदा सुलफ़ ले आया करते थे।

आप को किसी व्यक्ति के बारे में ऐसी बात मअ़लूम होती जो आप को नापसन्द होती तो यह न कहते कि अमुक व्यक्ति ऐसा क्यों करता है। बल्कि यूं कहते कि लोगों को क्या हो गया है कि ऐसे कर्म करते हैं या ऐसी बातें ज़बान से निकालते हैं। इस प्रकार नाम लिए बिना उस कर्म से रोकते।

आप कमज़ोर व बेज़बान जानवरों और चौपाओं के प्रति सहानुभूति रखते और उनके साथ नर्मी का हुक्म फ़रमाते। आप कहते, "अल्लाह ने हर चीज़ के साथ अच्छा मुआमला करने और नर्म बर्ताव करने का हुक्म दिया है, इसलिए जब्ह करो तो अच्छी तरह करो, तुम में से जो ज़ब्ह करना चाहे वह अपनी छुरी पहले तेज़ कर ले और जिस जानवर को ज़ब्ह करना हो तो उसे आराम दे। आगे कहा है कि, "इन बेज़बान जानवरों के मुआमले में अल्लाह से डरो। इनपर सवारी करो तो अच्छी तरह उनको खाओ तो इस हालत में कि वह अच्छी हालत में हों, सेवक नौकर और मजदूर व गुलाम के साथ अच्छे बर्ताव की शिक्षा देते" और कहते, जो तुम खाते हो वही उनको खिलाओ जो तुम पहनते हो वही उनको पहनाओ, और अल्लाह की मख़लूक को कष्ट न पहुंचाओ। जिन को अल्लाह ने तुम्हारे अधीन किया है तुम्हारे भाई, तुम्हारे सेवक और मददगार हैं। जिसका भाई उसके मातहत हो उसको चाहिए कि जो स्वयं खाता है, वही उसको खिलाये जो स्वयं पहनता है वही उसको पहनाये। उनके सुपुर्द ऐसा काम न करो, जो उनकी ताक़त से बाहर हो, यदि ऐसा करना ही पड़े तो फिर उनका हाथ बटाओ।

एक दिन एक ग्रामीण अनपढ़ आप के पास आया और पूछा कि मैं अपने नौकर को एक दिन में कितनी बार क्षमा करूं? आप सल्ल० ने कहा सत्तर बार। और फ़रमाया, "मज़दूरी उसकी पसीना सूखने से पहले दो।"

(पृष्ठ ४ का शेष)

तक किसी और ने इस लिए कि इस्लाम में इस की गुंजाइश नहीं है।

इस घटना का कारण यह हुआ कि यज़ीद के पिता हज़रत मुआविया (रज़ि०) जो एक सहाबी हैं और हज़रत हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की माता के सौतेले मामा हैं, उनसे सन्ध करके हज़रत हसन (रज़ि०) ने ख़िलाफत उनको सौंप दी थी। फिर कुछ वर्ष पश्चात हज़रत हसन (रज़ि०) का देहान्त हो गया और जब हज़रत मुआविया का अन्तिम समय आया तो उनके बअ़द की ख़िलाफत की कठिन समस्या उनके सामने आयी और उन्होंने अपने बेटे यज़ीद को अपने बअ़द के लिए नामांकित कर दिया। हज़रत हुसैन (रज़ि०) तथा हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ुमर तथा अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र उनके इस निर्णय से सहमत न हुए। यहां यह बात याद रखना चाहिए कि सहाब–ए–किराम किताब व सुन्नत के प्रकाश में खूब सोच विचार कर ही कोई निर्णय करते थे। फिर भी कभी कभी उनमें मत भेद हो जाता था। प्रत्यक्ष है कि एक ही बात के निर्णय में जब दो मत हों तो एक मत ग़लत होगा। ऐसी दशा में ग़लती वाला दण्डनीय न होगा बल्कि एक पुरस्कार का भागी होगा इस लिए कि उसने सत्य पालेने की चेष्टा की परन्तु चूक हो गई बुरी नीयत हरगिज़ न थी। अतः यदि हज़रत मुआविया से ख़िलाफ़त के लिये यज़ीद के नामांकन में ग़लती भी हुई हो तो उनके लिए बुरे शब्द बोलना महा पाप है। इसी प्रकार कुछ लोग दूसरे पक्ष को बुरा कह कर अपनी ही हानि करते हैं।

हज़रत मुआविया (रज़ि०) के देहान्त पर यज़ीद तख़्त पर बैठ गया और बैअ़त लेना आरम्भ कर दी। बैअ़त कहते हैं शासक के हाथ पर हाथ रख कर या उसके प्रतिनिधि के हाथ पर हाथ रखकर शासक को स्वीकार करने को। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और हज़रत हुसैन (रज़ि०) बैअ़त न करने पर जमे रहे और मदीना से मक्का चले गये। परन्तु होनी हो के रहती है।

कूफ़ा के लोगों ने सहस्त्रों चिट्ठियां तथा आदमी भेज कर हज़रत हुसैन (रज़ि०) को कूफ़ा आने और उन पर शासन करने पर राज़ी कर लिया और हज़रत हुसैन (रज़ि०) लोगों के रोकने के बावजूद कूफ़ा चल दिये। उधर यज़ीदी फ़ौज ने आप का रास्ता घेरा और कूफ़ा न जाने दिया बल्कि कर्बला के मैदान में ला उतारा, कई रोज़ तक परस्पर बातें होती रहीं परन्तु कोई ख़ैर की बात न निकल सकी अन्ततः ७२ लोगों का कई हज़ार सेना से मुक़ाबला हुआ जिस का अन्त हज़रत हुसैन (रज़ि०) और उनके साथियों की शहादत पर हुआ, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

बड़े खेद की बात है कि हज़रत हुसैन (रज़ि०) की शहादत के कई सौ वर्ष पीछे कुछ लोगों ने तज़ियादारी की बुरी बिदअ़त निकाल कर उसे हज़रत हुसैन की महब्बत और उनकी याद से जोड़ दिया। सो याद रहे कि इसमें सभी सुन्नी विद्वान एक मत हैं कि तज़ियादारी नाजाइज़ है। रही बात शीआ़ लोगों की तो वह तो सुन्नियों से अलग एक मत है।

त्याग और बलिदान का शानदार उदाहरण

डॉ० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

मक्का में इस्लाम और उसकी दावत का सब से बड़ा शत्रु अबू जहल अम्र बिन हिशाम था। उसने नबी सल्ल० और उनके सहाबा को तरह तरह की यातनाएं पहुंचा कर उनका जीना मुश्किल कर दिया था। इस अवधि में इब्लीस को भी एक तरह का सुख व शान्ति मिली होगी और वह अपने मिशन की सफलता से थोड़ा निश्चिन्त हो गया होगा, क्योंकि उसका आज्ञाकारी शिष्य और चुस्त व चालाक अनुयायी अबू जहल उसकी डयूटी पूरी तरह निभा रहा था।

अबू जहल का बेटा इकरमा मुसलमानों के साथ दुश्मनी में और उनको कष्ट पहुंचाने में बाप का पूरा पूरा साथ दे रहा था। बद्र की जंग में जब मुसलमानों द्वारा अबू जहल मारा गया तो इकरमा की दुशमनी में और वृद्धि हो गयी। उसने नबी सल्ल० की सफलता और इस्लाम की श्रेष्ठता को देख कर अपने लिए खतरा महसूस किया और मक्का छोड़ कर यमन के रासते, हब्शा या दूर किसी और देश की ओर जान बचाकर भाग जाने का इरादा किया। मगर उसकी पत्नी उम्मे हकीम के दिल में इस्लाम की सच्चाई बैठ गई थी। उन्होंने कुरैश की चन्द दूसरी महिलाओं के साथ नबी सल्ल० के मुबारक हाथ पर इस्लाम व ईमान की बैअत कर ली थी। उन्होंने अपने पति की माफी के लिए नबी सल्ल० से विनती की। नबी सल्ल० ने बड़ी उदारता के साथ माफ कर दिया। उम्मे हकीम अपने पति की तलाश में निकल पड़ीं और कश्ती रवाना होने से पहले यमन के तट पर पहुंच गयीं। इकरमा को माफी की शुभ सूचना सुनाई और वापस ले आयीं। उसके बाद इकरमा नबी सल्ल० के हाथ पर ईमान ले आए नबी सल्ल० ने उनको माफ़ कर के दुआ दी। हज़रत इकरमा रज़ि० ने खुश होकर कहा: ऐ अल्लहा के रसूल सल्ल० कसम है उस हक ज़ात की, मैं इस्लाम के विरुद्ध जो कुछ करता था, अब उससे दुगना खुदा की राह में और इस्लाम के प्रचार के लिए करूंगा और दीन को तबाह करने के लिए जितनी ताक़त से जंग करता था उससे दुगनी ताक़त और उत्साह व साहस के साथ खुदा के मार्ग में जंग करूंगा। उन्होंने उसी समय से अपनी इस क़सम को पूरी करने के लिए प्रयास शुरू कर दिया और समस्त इस्लामी जंगों में बहादुरी व हिम्मत के साथ लड़े।

जंगे यरमूक में उनका अजब हाल था। ठाठें मारते हुए रूमानी लश्कर को देख कर उनका उत्साह व साहस और बढ़ गया। जैसे पियासा ठंडा पानी देखते ही उस पर टूट पड़ता है, वैसे ही वे शत्रुओं को देख कर जंग के मैदान में कूद पड़े। जब जंग में तेजी आई और मुसलमानों का एक छोर कमज़ोर पड़ता दिखाई दिया तो वे घोड़े से उतर पड़े, अपनी कमान तोड़ दीऔर रूमी सैनिकों की पंक्तियों की ओर झपटे। हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ि० ने रोका, ऐसा न करो तुम्हारी शहादत मुसलमानों पर बड़ी भारी गुज़रेगी। हज़रत इकरमा रज़ि० ने जवाब दिया : खालिद मुझे जाने दो, तुमने तो नबी सल्ल० के साथ इस्लाम की बहुत अधिक सेवा की है, मगर मैं और मेरा बाप तो नबी सल्ल० के सख़्त दुश्मन थे, मुझे जाने दो शायद मैं अपने कुकृत्यों का कुछ परायश्चित कर सकूं। फिर कहा कि मैंने नबी सल्ल० के विरुद्ध बहुत अधिक जंग की है। आज मैं रूमियों से पीछे हट जाऊं ऐसा नहीं हो सकता। फिर मुसलमानों को आवाज देकर कहा कौन है जो मौत के लिए बैअ़त करता है? उनके चचा हारिस बिन हाशिम, ज़रार बिन अज़वर और चार सौ अनुभवी मुसलमानों ने मौत की बैअ़त की।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने खेमों के आस पास रूमियों से सख्त जंग की। अन्ततः रूमी पराजित होकर भागे। इस के बाद जंग के मैदान पर मुसलमनों ने नज़र दौड़ाई तो लाशों के बीच तीन मुजाहिद लहु लुहान जमीन पर पड़े तड़प रहे थे, हारिस बिन हिशाम, अयाश बिन रबीअ़ और इकरमा बिन अबी जहल। हारिस ने पानी मांगा, एक मुजाहिद दौड़ कर पानी लाया। हारिस ने पानी का प्याला मुंह से लगाया ही था कि इकरमा की आवाज़ आई, पानी। हज़रत हारिस ने प्याला होंटों से हटा कर इकरमा की ओर इशारा किया कि

पहले उन्हें पिला दो, वे अधिक प्यासे हैं। पानी का प्याला हज़रत इकरमा के मुंह से लगाया गया, अभी उन्होंने पिया भी न था कि हज़रत अयाश ने पानी मांगा। हज़रत इकरमा ने कहा कि अयाश को पानी पिलाओ, वे मुझसे अधिक प्यासे हैं। पानी पिलाने वाला मुजाहिद हज़रत अयाश की तरफ दौड़ा, मगर जब वह उनके पास पहुंचा, वे अपने वास्तविक स्वामी से जा मिले थे। मुजाहिद उल्टे पांव दोनों की तरफ वापस हुआ, ताकि उन्हें पानी पिला दे, मगर वे दोनों भी इस दुनिया को त्याग चुके थे।

इन तीनों मुजाहिद ने प्यास से तड़पते हुए और मौत के बिलकुल निकट होते हुए भी, अपने आप पर दूसरे मुसलमान भाई को प्रमुखता दी और त्याग का एक ऐसा उदाहरण स्थापित कर दिया जो मानवता के लिए सदैव रोशन मीनार बना रहेगा।

त्याग व बलिदान का एक और उदाहरण देखिए। दूसरी सदी हिजरी के प्रख्यात इतिहासकार व लेखक वाक़िदी बयान करते हैं कि मेरे दो दोस्त थे, उनमें से एक हाशिमी थे। हम तीनों एक जान तीन जिस्म थे। मैं सख्त तंगदस्ती व फ़ाका की हालत से दोचार था। बड़ी तंगी और परेशानी से जीवन बसर हो रहा था। इसी बीच ईद आ गयी। मेरी पत्नी ने मुझसे कहा कि हम जिस हाल में है, सहन कर लेंगे, मगर बच्चों के हाल पर मुझे तरस आ रहा है। उनके कपड़े फटे पुराने हैं, उनकी ईद कैसी होगी और जब वे निकलेंगे और पास पड़ोस के बच्चों को देखेंगे तो उन पर क्या गुजरेगी। कम से कम उनके लिए कपड़ों का प्रबन्ध कर दो। मैंने अपने हाशिमी दोस्त को एक पर्चा भेजा और ईद के अवसर पर उनसे मदद मांगी। उन्होंने मुझे एक थैली भेजी। उसमें एक हज़ार दिरहम थे। मैंने अभी थैली हाथ में पकड़ी ही थी कि मुझे मेरे दूसरे दोस्त का पर्चा मिला। उसने वही बात लिखी थी, जो मैंने अपने हाशिमी दोस्त को लिख कर भेजी थी। मैंने वह थैली ज्यों की त्यों उस दोस्त के भेज दी और अपनी पत्नी को सारी बात बता दी। मेरी पत्नी ने मेरे इस कदम को पसन्द किया और नाराज़ नहीं हुई और न मुझे बुरा भला कहा।

मैं अपनी पत्नी को यह बात बता ही रहा था कि मेरा हाशिमी दोस्त आ पहुंचा और उसके हाथ में बिल्कुल वैसी ही थैली थी। मेरे हाशिमी दोस्त ने कहा कि सच सच बताओ, मैंने जो थैली तुम को भेजी थी, तुमने उसका क्या किया? मैंने उसे जो कुछ पेश आया था, ठीक वही बता दिया। उसने मुझसे कहा यकीन करो कि जिस समय तुमने मुझसे कुछ मदद मांगी, तो मेरे पास इस थैली के सिवा और कुछ न था। यह थैली मैंने तुम्हारे पास भेज दी, और मैंने दूसरे दोस्त को मदद के लिए लिखा तो उसने एक थैली मेरे पास भेजदी। मुझे अपनी ही थैली देखकर हैरत हुई और सीधा तुम्हारे पास आया ताकि सही बात का पता करूं। वाकिदी कहते हैं कि फिर हम तीनों ने मिल कर बराबर बराबर दिरहम बांट लिए। तीन तीन सौ हम लोगों ने लिए और एक सौ दिरहम पत्नी को दे दिए। किसी ने खलीफा मामून रशीद को इस घटना की सूचना देदी। मामून ने मुझे बुलाया और पूरी घटना सुनी। उसके बाद हमारे लिए सात हजार दीनार देने का आदेश दिया। दो दो हजार हम तीनों के लिए और एक हजार मेरी स्त्री के लिए।

काशः मुस्लिम समाज फिर इन्हीं जैसी नैतिक मूल्यों का केन्द्र बन जाता।

मुनाजात

मौ० मु० सानी हसनी

ऐ खुदा हर तरफ़ ज़ुल्म का राज है
जो है ज़ालिम वही साहिबे ताज है
अद्ल पामाल है रहम तारज है
बेकसों पर तशद्दुद रवा आज है
ज़ुल्म करते हैं जो उनसे ले इन्तिक़ाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

बोझ हम पर न रख जिसकी ताक़त न हो
काम वह तू न ले जिस की हिम्मत न हो
इस जहां में हमारी बुरी गत न हो
गैर के सामने हम को ज़िल्लत न हो
सारी दुन्या हमारा करे इहतिराम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

नागहां कोई आए न हम पर बला
ग़र्क़ हम को न कर, आग में मत जला
हम न दब कर मरें जलज़ला तू न ला
सख़्त अम्राज में कर न तू मुबतला
दिको बर्स हो या कि अक्ला ज़ुज़ाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

लब पे कल्मा हो जारी दमे वापसीं
दिल में हो तेरे अफ़्वो करम का यकीं
वक्त हो जांकनी का हसीं से हंसीं
हातिफ़े ग़ैब हो लब कुशा आफ़रीं
दें फिरिश्ते हमें मग़फ़िरत का पयाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

क़ब्र में रौशनी हो तेरे नाम से
पेश मुनकर नकीर आयें इक्राम से
तू बचा क़ब्र में हम को आलाम से
हम क़ियामत तलक सोएं आराम से
बादे रहमत के झोंके चलें सुब्हो शाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

अपना इह्तिसाब अल्लाह का शुक्र और साथियों का शुक्रिया

"सच्चा राही" के दो वर्ष पूरे हुए यह तीसरे वर्ष का पहला अंक है। हम ने इस को अच्छा बनाने संवारने लाभदायक बनाने शुद्ध लिखाने और शुद्ध छापने की अपनी सकत भर पूरी कोशिश की परन्तु जब भी पर्चा हाथ में आया त्रुटियां सामने आईं दुख हुआ, शर्म आई दूसरों की आलाचनाओं पर सर झुका लिया और आइन्दा अधिक ध्यान देने का प्रण लिया इन कोतहियों के बावजूद इस के पढ़ने वाले बढ़ते ही गये और अब यह १८०० छप रहा है। यह सब कुछ अल्लाह की मिहरबानी और उस की कृपा से हो रहा है। हम अल्लाह का लाख–लाख शुक्र अदा करते हैं। अल्लाह तआला सच्चा राही द्वारा मानव सेवा का अवसर निरन्तर देता रहे। सत्य प्रकाशन इस का काम रहे और असत्य से यह सुराक्षित रहे।

हम अपने सम्मानित बुज़ुर्ग सहयोगी जनाब मुहम्मद हसन अन्सारी साहिब के आभारी हैं जो अपने लाभ प्रद लेखों तथा महत्वपूर्ण परामर्शों से नवाज़ते रहे हैं। जनाब हबीबुल्लाह आज़मी और जनाब मौलाना मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी दोनों सज्जन अपने लेखों तथा पुरूफ़रीडिंग से बराबर सहयोग देते रहे हैं। इधर तीन महीनों से मौलाना मु० गुफ़रान साहिब नदवी का भी बड़ा सहयोग मिलता रहा। अल्लाह इन सब को जज़ाए ख़ैर दे । पर्चे में ग़लतयाँ ज़रूर रह जाती हैं फिर भी पर्चा बड़ा सुन्दर लगता है इस की सुन्दरता का क्रेडिट जनाब मसीहुज़्ज़माँ साहिब और कम्पोज़ीटर सलमान साहिब को जाता है। जनाब मौलाना मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी नाज़िरे आम नदवतुल उलमा की तवज्जुह से यह पर्चा बराबर निकल रहा है। अल्लाह तआला (डाक्टर) मुईद अशरफ़ नदवी प्रबन्धक और जनाब अतहर हुसैन साहिब प्रकाशक तथा इस के सभी सहयोगियों और समर्थकों को जज़ाए ख़ैर दे। हम अपने सहयोगी स्टाफ़, लेखकों तथा पाठकों का बहुत बहुत शुक्रिया अदा करते हैं तथा सभी सज्जनों से दरख़्वास्त करते हैं कि इस के ख़रीदार बढ़ाएं यहाँ तक कि यह अपने पैरों पर खड़ा हो जाए।

अजीब बात है कि मार्च का महीना *''सच्चा राही''* के लिये नये वर्ष का पहला महीना है तो इसी महीने में आने वाला मुहर्रम इस्लामी कलेन्डर का पहला महीना है। हम सभी पाठकों को इस्लामी नये साल की भी मुबारक बाद देते हैं तथा "सच्चा राही" के नये साल की भी मुबारक बाद देते हैं। अल्लाह तआला इस साल में भले काम करने की तौफ़ीक दे, आमीन।

नया साल सब को मुबारक हो या रब
यह तिज़कारे हिजरत मुबारक हो या रब
शहीदों के सरदार हम्ज़ा हैं बेशक
नबी का ये फ़र्मा मुबारक हो या रब
उमर और उस्मां हुसैन और अली को
शहादत का दर्जा मुबारक हो या रब
रहे हक़ में कुर्बा हुये जो हैं उनको
हयाते हमेशा मुबारक हो या रब
मुसीबत जो आये करूं सब्र दिल से
हमें सब्र करना मुबारक हो या रब

यह ईश्वर की माया है

सच्चा रही आया है
प्रेम सन्देशा लाया है
दो मंज़िल यह पूरी करके
वर्ष तीन में आया है
भूल चूक की क्षमा मांग कर
अगला वर्ष अपनाया है
अहद ये कर के ग़लती ना हो
आगे क़दम बढ़ाया है
पर इन्सां से ग़लती होगी
फ़ितरत में यह पाया है
बुरा कहो गे हम सह लेंगे
सेवा करना भाया है
मानव सेवा कर्म है अपना
सब को यही सिखाया है
राज सत्य का हो दुन्या में
मन में यही समाया है
जन सेवक हैसच्चा राही
सत्य सन्देशा लाया है
बात है सच्ची सुन लो भैया
ईश्वर ने कहलाया है
अमरीका और लन्दन वालों
ने सब को बहकाया है
अफ़ग़ानों पर क़ब्ज़ा करके
इराक़ देश हथ्याया है
फिर भी मुस्लिम देशों की हाँ
समझ में कुछ न आया है
मित्र बना जो अमरीका का
उस ने धोखा खाया है
बने चौधरी दुन्या भर का
बुश ने यह अपनाया है
मिल जाओ सब दुन्या वालो
सत्य सन्देशा आया है
बोल रहा है सच्चा राही
यह ईश्वर की माया है

शैतान जादू से अपने रूप बदल लेते हैं

अबू मर्गूब

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ुमर (रज़ि) का कथन है कि कोई अपना रूप जिस पर वह पैदा किया गया है बदल नहीं सकता परन्तु ग़ीलान अर्थात शैतान जिन्नो में जादूगर हैं वह जादू की सहायता से अपने रूप बदलते हैं (फ़त्हुल बारी जिल्द ६ पृष्ठ ३४४)

प्रत्यक्ष है मुसलमान जिन भी अपनी शक्लें बदलते रहे हैं जैसा कि सहीह मुस्लिम में सॉप जिन्न का उल्लेख है। वह सहाबी जिन्न थे कुछ बुज़ुर्गों से मन्कूल (उल्लेखित) है कि जिन्नों को कुछ पढ़ने के उपाए ज्ञात हैं जिन को पढ़ कर वह अपनी शकलें बदल लेते हैं।

पवित्र कुआन की आयत से यह संकेत मिलता है कि हज़रत सूलैमान अ़लैहिस्सलाम के समय में शैतान इन्सानों की शक्ल में इन्सानों में घुले मिले रहते थे इस लिये कि इस के बिना वह जादू(सिहर) को हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम से जोड़ न सकते थे। उक्त हज़रत अ़ब्दुल्लाह इबिन अ़ुमर के कथन से इस बात की पुष्टि हो जाती है।

हारूत व मारूत

रही बात हारूत व मारूत दो फ़िरिश्तों द्वारा जादू की शिक्षा की तो इस विषय में कुर्आन के टीका कारों में बड़ा मत भेद है। और उन्हों ने ज़ुहरा की आशचर्य जनक कहानी का उल्लेख किया है। परन्तु इस कहानी की बातों कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम से पुष्टि नहीं होती ।

अनुमान है कि उस काल में जादू का बड़ा प्रचलन था। अल्लाह की नीति ने इस जादूई उपद्रव में लोगों की जांच के लिये दो फ़िरिश्तों "हारूत व मारूत" को बाबुल में उतारा। इन फ़िरिश्तों के पास जो आता वह उस से साफ बताते कि देखो हम तुम लोगों के इम्तिहान (परीक्षा) के लिये भेजे गये हैं। हम बताते हैं कि जादू सीखना और करना कुफ़ है। हम को जादू की एक एक बात ज्ञात है । परन्तु, तुम लोग उसे जान कर उस से बचने के बजाए उसे करने लगोगे अतः इसे सीखो ही नहीं और समझो कि इस का सीखना और करना कुफ़ है। परन्तु कुछ लोग आते और जादू की पहचान के बहाने सीखते और फिर उस मे फंस जाते और जादू कर के कुफ़ कर बैठते।

रहा फिरिश्तों का सिखाना तो इस को यूँ समझा जा सकता है कि किसी अ़रबी को आप हिन्दी भाषा सिखाएं । जब उस को भली भांति हिन्दी आ जाए तो आप बताएं कि हिन्दी में अमुक शब्द तथा वाक्य बोलने से कुफ़ हो जाता है तथा फ़ुलॉ फ़ुला शब्द तथा वाक्य गाली हैं। इन को बोलो गे तो लड़ाई हो जायेगी। अब अगर यह अ़रबी कुफ़ वालें शब्द बोल कर कुफ़ करे और किसी पर गाली वाले शब्द बोल कर मार खाए तो आप की क्या ग़लती । इसी प्रकार फ़िरिश्तों का क्या कुसूर । फिर फ़िरिश्ते तो अल्लाह के आज्ञा कारी हैं जो आदेश मिलता है उस का पालन करते हैं।

याद रहे कि छुपा कर बअ़ज़ दवावों के असरात से अजीब बात दिखाना, या नज़र बचा कर हाथ की सफाई पेश करना या बाज़ी गरों का तमाशा आश्चर्य में डालने के कारण मेजिक या जादू कहलाते हैं मगर यह वह जादू नहीं जिस का सीखना और करना कुफ़ हैं। इस से बढ़ कर जादू तो रेडियो, मोबाइल,इन्टरनेट और फ़ैक्स आदि हैं जो उस प्रसिद्ध जादू में नहीं आते।

जादू के विषय में निर्देश

अगर जादू के शब्दों में शैतानों, नक्षत्रों आदि से सहायता मॉगी गई हो तो इस का करना तथा सखिना कुफ़ है। चाहे इस से किसी को लाभ पहुँचाया जाये या हानि। अगर जादू के मंत्र में ऐसे शब्द हों जिन का बोलना बेध (मुबाह) हो तो अगर उन के द्वारा किसी को हानि पहुंचाई जाय या कोई नाजाइज़ काम किया जाए तो यह अ़मल फ़िस्क़ (बड़ा पाप) है। यदि उस से नाजाइज़ काम न किया जाए तो उस के सीखने करने में काई हरज नहीं और मंत्र के जिन शब्दों का अर्थ ज्ञात न हो उन से बचना आवश्यक है। तअ़वीज़, गन्डो और नक़्श आदि के यही निर्देश हैं। शब्दों के अर्थ ज्ञात हों। शब्द अवैध न हों, अवैध कामों में प्रयोग न हों। (दिखिये बयानुल कुर्आन जि० पृष्ठ५७)

●●●

मानवता का मूल्य उसके गुणों से है

मुफ़्ती मुहम्मद ज़हूर नदवी

यह सत्य है कि मानव का मूल्य उसके गुणों से है। एक मानव क्या संसार की हर वस्तु का मूल्य उसके गुणों से है। गेहूं, दाल चावल आदि का मूल्य इसी लिये तो है कि उनसे मानव की भूख मिटती है और मानव का शरीर पुष्ट होता तथा उसे शक्ति मिलती है अर्थात यह दाने मानव का आहार हैं इसलिए वह मूल्यवान हैं। यदि यही अनाज विषैले हो जाएं तो कौड़ी के मोल न बिकें फ़ेंक दिये जाएं। पानी का मूल्य इसी से तो है कि उससे मानव की प्यास बुझती है। मानव का जीवन इसी पानी पर निर्भर है। हर जीव, अपितु हर वनस्पति का जीवन पानी पर आधारित है। यदि पानी विषैला हो जाए, पानी में कीटाणु हो जाएं तो उस पानी का कोई मूल्य न होगा जब तक वह निर्दोष न हो जाए। वायु का मूल्य इसी लिए है कि मानव का जीवन वायु पर निर्भर है। यही वायु दूषित हो जाए उसमें से आक्सीजन निकल जाए तो आदमी उससे भागे गा। यह अलग बात है कि जो वस्तु मनुष्य के लिय अत्यन्त आवश्यक है उसकी प्राप्ति अत्यन्त सरल है। खाना बिना मनुष्य कई दिनों तक जीवित रह सकता है तो वह मिलता तो है परन्तु कुछ श्रम के पश्चात कुछ खर्च करके। खाने के मुकाबले में पानी आवश्यक है तो उसकी प्राप्ति बिना मूल्य है फिर भी उसके लिए कुछ करना पड़ता है नदी तालाब से लाना पड़ता है कुंए से निकालना पड़ता है, नल से लेना पड़ता है। परन्तु वायु बिना तो मनुष्य पांच मिनट भी नहीं रह सकता तो वायु बिना मूल्य और बिना कुछ किये स्वतः प्राप्त है।

मावन के अनुभव में सोने के गुण चान्दी से अधिक हैं अतः सोना चांदी से मूल्यवान है। नोट तथा कापी का पन्ना दोनों काग़ज़ हैं परन्तु नोट का गुण यह है कि उसके द्वारा हमारी आवश्यकताएं पूरी होती हैं अतः उस का मूल्य कापी के काग़ज़ से कहीं अधिक है।

मानव का मूल्य भी उसके गुणों से ही है परन्तु उस के मूल्य के दो प्रकार हैं। एक मूल्य तो उस का केवल सांसारिक है और दूसरा मूल्य पारलौकिक अर्थात इस जीवन के समाप्ति पर सदैव रहने वाले जीवन में।

इस जीवन में मानव का मूल्य उस की सांसारिक मानव सेवा पर है। अपने भाइयों को अपनी बोली वाणी, अपने कर्मों तथा आचरणों द्वारा सुख पहुंचाने पर है, अपने तन, मन, धन से निःस्वार्थ सेवा पर है। किसी पर समय पड़ने पर उस की सहायता पर है। गिरे हुए को उठाने, पिछड़ों को आगे बढ़ाने तथा उनको उन्नति मार्ग पर लगाने पर है। ज्ञान विज्ञान के प्रसारण पर है। अनपढ़ों को विद्या पढ़ाने और रोगियों तक औषधि पहुंचाने पर है। नेत्र हीनों को मार्ग बताने और लंगड़ों को सहारा देने पर है। अनाथों को संरक्षण और विधवाओं की खबरगीरी पर है। निर्बलों को सहायता देने और वृद्धों का हाथ पकड़ने पर है। देश तथा समाज की इज़्ज़त आब्रू और उसके धन सम्पत्ति की सुरक्षा पर है।

यह और इस प्रकार के बहुत से कार्य हैं जिन को अपनाने पर एक मनुष्य देश तथा समाज में अपितु समस्त संसार में मूल्यवान हो जाता है। लोग उसका सम्मान करते हैं, उससे प्रेम करते हैं, उसका अनुसरण करते हैं तथा उसे आंखों पर बिठाते हैं।

परन्तु मेरे भाइयो उस सदैव वाले जीवन में अपना मूल्य लगवाने के लिए इन कर्मों के साथ कुछ और भी अनिवार्य कार्य हैं। उनमें सर्व प्रथम ईश्वर की प्रभुता का स्वीकार करना और उसके आदेश वाहक अर्थात उसके सन्देष्टा को मानकर और उससे ईश आदेश तथा ईश सन्देश लेकर उन सबको सत्य मान कर उन आदेशों का पालन करना है। इसी को इस्लामी परिभाषा में ईमान लाना कहते हैं जिस प्रकार राष्ट्र विद्रोही चाहे जितने भले काम करे राष्ट्र दृष्टि में उसका स्थान कारागार है। उसी प्रकार ईश विद्रोही का (खुदा के बागी का) ठिकाना जहन्नम है। यह तो ईश्वर की कृपा ही है कि उसने इस संसारिक जीवन में हर एक को ढील दे रखी है ताकि वह चाहे तो मरने से पहले पहले अपने विद्रोही जीवन पर लज्जित हो और ईश्वर की ओर लौट आए। उक्त सांसारिक भले कार्यों के साथ पारलौकि सुख के लिए उक्त विश्वासों के साथ कुछ और कार्य भी

अनिवार्य हैं ईश्वर (अल्लाह) ने अपनी विशेष उपासना के कुछ कार्य अनिवार्य रूप से नियुक्त किये हैं। जैसे नित्य पांच समय नमाज़ पढ़ना, माल पर हर वर्ष ज़कात देना, रमज़ान मास के रोज़े रखना, सामर्थ्य वाले को जीवन में एक समय हज्ज करना। इनके अतिरिक्त ईश्वर जीवन बिताने के पूर्ण नियम दिये हैं, शादी विवाह (निकाह) कैसे करें, खेती, व्यापार, नौकरी, राजनीति, शासन तात्पर्य यह कि जीवन बिताने का पूर्ण विधान दिया और मनुष्य को अधिकार नहीं दिया कि चाहे उनको अपनाये चाहे छोड़ दे। यदि उसने ईश विधान अर्थात शरीअ़त को छोड़ दिया तो आख़िरत (परलोक) में यही नहीं कि उसका कोई मूल्य न होगा अपितु वह दन्डित भी होगा। दण्ड भी साधारण नहीं इस संसार की सत्तर गुणा तीव्र आग में जलेगा जिस में उसे मौत न आएगी।

आरंभ में जो सांसारिक भले कार्य बताए गये हैं वह भी ईश विधान (शरीअ़त) में अनिवार्य हैं। बस उन में इतना बदलाव आवश्यक है कि जो भी भला कार्य किया जाए वह दिखावे के लिए न हो, नाम के लिए न हो केवल और केवल अल्लाह (ईश्वर) को राज़ी और प्रसन्न करने के लिए हो इसी को अ़रबी भाषा में और इस्लामी परिभाषा में इख़्लास कहते हैं। इख़्लास के बिना किसी भी कार्य में कोई भलाई नहीं और आख़िरत (परलोक) में उसका कोई मूल्य नहीं। अतः मनुष्य को यदि आख़िरत (परलोक) में अपना मूल्य लगवाना है तो अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (स०) के बताये हुए नियम से अल्लाह (ईश्वर) पर ईमान लाये उनकी शिक्षानुसार इख़्लास के साथ अपना जीवन बिताये। मानव इन्सान वास्तव में अपने व्यक्तित्व में हाड़ मांस का एक समूह है। अपने मूल में उसका कोई अधिक मूल्य नहीं। कुर्आन स्वयं घोषित करता है। "न अस्रि इन्नल् इन्सान लफ़ी खुस्र (निःसन्देह इन्सान हानि में है) इन्सान की श्रेष्ठता तथा उच्चता उसके गुणों ही से है यदि मानव में वह गुण उत्पन्न हो गये जिन की ओर पैगम्बरों (सन्देष्टाओं) ने बुलया, वह दशा बना ली जिस का निमंत्रण नबियों (सन्देशवाहकों) ने दिया तो वह उत्तम है श्रेष्ठ है। कुर्आन ने उसको हानि वाले मानवों से अलग किया है।

ऐसे ईश भक्तों के व्यक्तित्व की भी सुरक्षा होगी, और उनके अस्तित्व की भी सुरक्षा होगी कि वह गुणवान हैं। उनके जीवन से मानव तथा मानवता को लाभ है। उनके कर्म तथा आचरण स्वीकृति प्राप्त हैं। परन्तु यदि इस का उल्टा हुआ तो यही मानव विषैले और गदले पानी की भांति फेंक दिया जायेगा।

हम अल्लाह (ईश्वर) के पुरस्कारों से भरपूर लाभ उठाएं, उनसे आनन्दित हों फिर कृतज्ञता के स्थान पर कृतघ्नता अपनाएं, आज्ञा पालन के स्थान आज्ञा उल्लंघन करें, अवज्ञा अपनाएं, अवज्ञा ही नहीं ईश प्रकोप (खुदा के ग़ज़ब) को चुनौती दें। खुल्लम खुल्ला विद्रो करें और फिर आशा रखें कि हम को छोड़ दिया जाएगा, क्षमा याचना बिना क्षमा कर दिया जाएगा। हमारा अस्तित्व सुरक्षित रहेगा। ऐसा समझना बड़ा ही आश्चर्य जनक है। याद रखिये जब किसी राज्य के विद्रोही को उसके राज्य में शरण नहीं तो ईश्वर (खुदा) के विद्रोही को उसके राज्य में शरण कहां। हमारा जीवन विद्रोहपूर्ण है, सिवाए उसके जिस को अल्लाह ने बचा रखा है। हम अपने को स्वयं परखें कि हमारी क्या दशा है, किसी के लेख़, भाषण या उपदेश की आवश्यकता नहीं हम अपना अवलोकन स्वयं करें, हमारा परीक्षा पत्र तथा उत्तर पुस्तिका हमारे हाथ में है। हम अपने अंक स्वयं निर्धारित कर के परिणाम देख लें।

बच्चे गायें

रूबी लखनवी

है हुक्मे खुदा तुम पढ़ो दोस्तो।
यह पढ़ने के दिन हैं पढ़ो दोस्तो।।
अगर चाहते हो कि हो काम्याब।
किताबों से उल्फ़त करो दोस्तो।।
जो चाहो नतीजे में अव्वल रहो।
तो तुम खूब मेहनत करो दोस्तो।
हर इक हाल में उसको पूरा करो।
जो वअ़दा किसी से करो दोस्तो।।
जो हो जाये तुम से खता भूल से।
खता पर नदामत करो दोस्तो।।
कहो तुम मेरे रब खता बख्श दे।
न तौबा में सुस्ती करो दोस्तो।।
चलो नेक रस्ते पे नेकी करो।
न हर गिज़ बदी तुम करो दोस्तो।।
वह रब जिस ने पैदा किया है तुम्हें।
तुम उससे हमेशा डरो दोस्तो।।

मेरे रब हक़ की हक़ीक़त खोल दे
उल्फ़ते हक़ मेरे दिल में घोल दे
और बातिल की मुझे पहचान दे
दूर बातिल से रहूं वह ज्ञान दे
तुझ को राज़ी करना मेरा काम हो
सुख मिले दुन्या में मुझ को, कब्र में आराम दे।

अपने यक़ीन और आमाल को अल्लाह के हवाले कर देने का नाम है

ईमान और इस्लाम

हैदर अली "नदवी"

इस्लाम का संक्षिप्त अर्थ है विश्वास और कार्य शैली में बदलाव और यही असके मूल मंत्र "कलमे" का निचोड़ है । अंतिम संदेष्टा मुहम्मद (स०) के समय और आप से पूर्व भी लोगों का विश्वास किसी न किसी ताक़त में निहित था, जिसकी आराधना करते थे, आकार या निराकार रूप मे उसकी उपासना करते थे, कष्टों, दुःखों, विपदाओं के निवारण या आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रार्थनाएं भी करते थे। इसकी श्रेणिया अलग–अलग थीं। कुछ कर्म नेकी (पूण्य) समझ कर करूणा एवं दया भाव से करते थे कुछ कर्म सुखी जीवन यापन के लिए किसी शक्ति को प्रसन्न करने के लिए करते थे। आमाल (कर्मो) की एक श्रेणी (किस्म) वह थी जिनका संबन्ध निजी जीवन से था इनमे रहन सहन खुशी ग़मी के उत्सव; खाना कमाना शादी व्याह, धनोपार्जन, राजनीति, अर्थ व्यवस्था, पालन पोषण, मित्रता, शत्रुता लेन देन, शिक्षा दीक्षा, इत्यादि। उपासना एवं पूजा पद्वति के लिए कोई उसूल नही थे न कोई निश्चित माबूद (उपास्य) था जिसमें सारी शक्तियाँ निहित मानते। जहाँ से लाभ या हानि होती नजर आयी उसी की पूजा शूरू कर दी कोई दौलत (लक्ष्मी) की पूजा करता तो कोई अग्नि की। हानि पहुँचानें वाली चीजों से हानि पहुँचाने से वचने की पूजा की जाती। किसी की दुआ या प्रार्थना से कोई लाभ पहुँचा तो उसे खुदाई मे दख़ील समझकर मरने के बाद भी उसकी कब्रों (समाधियों) पर जा–जा कर सदियों तक उसी से लौ लगाते रहे उसी से मुरादें मांगते रहे, जनता का विश्वास एक शक्ति से हट कर सैकडों, हजारों बल्कि करोड़ों शक्तियों मे बट चुका था(बद क़िस्मती से आज भी है) उम्मत का विश्वास गैरूल्लाह से मॉगने का बन चूका था, जो बड़ी हद तक आज भी मुस्लिम और गैर मुस्लिम दोनों तबक़ो में जारी है यक़ीन, विश्वास जिसका संबन्ध दिल से है दूसरी चीज़ मनुष्य के आमाल जिनको मनुष्य अपनी मर्जी अथवा समाज, सरकार या किसी के अपने बनाए हुए उसूल के आधार पर करते थे इस्लाम ने इन दोनों चीजों में परिवर्तन (बदलाव) लाने की तालीम दी अर्थात विश्वास यह हो कि सबसे हटकर एक अल्लाह (ईश्वर) में आ जाए इस कल्म–ए–ला इलाह इल्लल्लाह, पर ईमान। यक़ीन से ताप्तर्य है कि स्रष्टि का कर्ता, धर्ता, संसार का नष्ट करना, बाकी रखना, जीवन–मौत, भाग्य का बनाना बिगाड़ना, अंतिम रूप से सर्वशक्तिमान अल्लाह मे समझा जाए। सारी सृष्टि में जिन शक्लों (रूपों) से हमारा काम बनता अथवा बिगड़ता नजर आ रहा है ये सारी शक्तियाँ शक्ति हीन हैं इनसे हमें वही मिलेगा जो ईश्वर चाहेगा ये सब खाली बर्तन के समान है ये गतिशील उसी वक्त होंगे जब ऊपर से आदेश मिलेगा अतः इनका प्रयोग ईश्वर के आदेशानुसार करना ईमान की निशानी है। इसी प्रकार हमारी कार्य शैली हमारे कर्म जो हम जीवन यापन के लिए करते हैं, खाना पीना–सोना जागना मित्रता शत्रुता शादी निकाह सामाजिक आर्थिक राजनीतिक, तथा धार्मिक गति विधियाँ अपनी मर्जी व इच्छा अथवा किसी मनुष्य के तरीकों के स्थान पर अल्लाह के संदेष्टा मुहम्मद (स०) के पवित्र तरीकें पर हों ये है अ़मल (कर्म) का बदलाव।

इसी लिए मुहम्मद (स०) ने शर्त लगा दी कि जब तक इन दोनों बातों में परिवर्तन नही होगा कोई भी आदमी इस्लाम मे दाखिल ही नहीं हो सकता फरमाया कि इस्माल की नींव पॉच बातों पर है सर्व प्रथम अल्लाह के माबूद (उपास्य) होने की गवाही देना फिर क्रमशः नमाज, ज़कात, रोजा, हज हैं। अगर हमारे अन्दर इन दो चीजों मे परिवर्तन नहीं है तो हम लाख दावा करते रहें कि मुसलमान हैं हमारा नाम मुसलमानों जैसा है, सरकारी रिकार्ड मे भले ही हमे मुसलमान कहा जाए भले ही हमारी नमाज़ें जनाज़ा पढ़ी जाए ये चीजें हमें मुसलमान नही बना सकती। नबी की औलाद, वली , कुतुब व अब्दाल की औलाद है, लेकिन अगर ये बदलाव उनके अन्दर नहीं है तो वह भी मुसलमान नहीं रहेगी. सिर्फ जबान से कलमा पढ़लेना मुसलमान होने के लिए काफी नहीं है अगर कोई मनुष्य अथवा कौम ये सोचे कि सिर्फ ज़बान

से कलमा पढ़ लिया हफ़्ते या साल में चन्द रस्में पूरी कर लीं – बस अल्ला अल्ला खैर सल्ला "रिन्द के रिन्द रहे जन्नत भी हाथ से न गयी" – अगर हम वह मुसलमान बनना चाहते हैं जो अल्लाह के यहां मतलूब (अपेक्षित है) जिसके लिए मृत्यु के पश्चात हमेशा की सफलता, ऐश व आराम का जीवन है तो उसके लिए प्रत्येक अवसर और प्रत्येक कार्य में लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह को लागू करना पड़ेगा– ये बदलाव किसी जाति देश धर्म के मनुष्य में आ गया तो वह मुसलमान है – और अगर मुसलमान कहलाने वाले लोगों के जीवन में ये बदलाव नहीं आया तो वह कौमी मुसलमान तो हो सकते हैं लेकिन इस्लामी मुसलमान कदापि नहीं हो सकते। इस्लाम सिर्फ दावा करने का नाम नहीं है न ही इस्लाम नुमा कुछ रस्में अदा करने का नाम इस्लाम है। इस्लाम ने अपने मानने वालों से हक़ीक़त अमल की मांग की है। इस्लाम की नींव ठोस बुनियादों पर है "ऐ ईमान (का दावा करने) वाले (हकीकी) ईमान लाओ" – कुछ मुनाफिकों की इसी रविश का कुर्आन में वर्णन है "व मिनन्नासि मंय्यकूलु आमन्ना बिल्लाहि व बिल यौमिल आखिरि" कुछ लोग हैं जो (जबानी जमा खर्च) दावा करते हैं कि हम भी अल्लाह और आखिरत पर विश्वास करते हैं कुर्आन ने इनके दोगले पन को स्पष्ट करते हुए कहा है 'वमा हुंम बि मुअमिनीन (खबरदार) ये मोमिन हैं ही नहीं ये तो अल्लाह और ईमान वालों को धोखा देने के लिए दाव–ए–ईमान कर रहे हैं। (ऐसा करके) वास्तव में ये बे अक्ले स्वयं को धोखा दे रहे हैं। आज अपने को मुसलमान कहने वाले भी गहराई से इस पर विचार करें कि ये बदलाव उनके यहां है कि नहीं आज जबानों पर कलमा है लेकिन कार्य शैली कुछ और प्रस्तुत कर रही हैं वलीमे में बफर सिस्टम, शक्ल व सूरत में यहूदियों ईसाइयों से भी आगे कर्मों में मन मानी, खाना कमाना, खर्च करना, सब में अपनी मर्जी बच्चों की तालीम तरबियत में क्रिश्चियन माइण्ड, औरतों को पर्दे से नफ़रत, ग़ैरों से मेल जोल, बच्चे बच्चियां टीवी के सामने थिरकते हुए डांस करें, कुरआन की तिलावत के बजाए गाने की आवाजें, मुसलमान औरतें किसी तकरीब (उत्सव) में जाएं तो मिस वर्ल्ड भी फेल, आइशा व फातिमा के स्थान पर उनकी आइडियल हीरोइन और मुस्लिम नौजवानों के आइडियल सनीमा के अदाकार हों। फिर हम बेशर्मी से कहें हम गुलामे मुहम्मद हैं। हम कुर्आन व हदीस वाले हैं रिन्द के रिन्द रहे जन्नत भी न गयी हाथ से।

आज अपना माहौल परिवर्तन करने की आवश्यकता तथा जिम्मेदारी मुसलमानों पर सबसे अधिक है। क्यों कि मुसलमान सिर्फ मुसलमान ही नहीं है बल्कि इस्लाम के रिप्रिजेन्टर (प्रस्तुत कर्ता) भी है।

(पृष्ठ ३३ का शेष)

नातेदारी के हुकूक (अधिकार) पूरा करने की बड़ी चेतावनी दी है, सही बुखारी में हजरत अबू हुरैरह और दूसरे दो असहाब से इस विषय की हदीस नक़ल की है कि अल्लाह तआला ने फरमाया कि जो शख्स (व्यक्ति) सिल–ए–रहिमी करेगा, अल्लाह तआला उसे अपने करीब करें गे और जो रिश्ता कराबत का काटेगा, अल्लाह तआला उसे अपने से दूर कर देंगे, इससे मालूम हुआ कि रिश्तेदारों और नातेदारों के साथ बात, काम और माल खर्च करने में एहसान का व्यवहार किया जाए इसका आदेश बहुत सख्त है, एक और हदीस में इरशाद (आदेश) है कि कोई ऐसा गुनाह जिसकी सज़ा अल्लाह तआला दुन्या में भी देता है और आख़िरत में भी अत्याचार और (कतअे रहिमी) रिश्ता काटने के बराबर नहीं।

हजरत सौबान रज़ि० की हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया कि जो शख्स चाहता हो कि उसकी उम्र जियादा हो और रिज़्क (जीविका) में बरकत हो उसको चाहिए कि "सिल–ए–रहिमी" करे अर्थात रिश्तेदारों के साथ एहसान का व्यवहार करे, सही हदीस में यह भी है कि रिश्तेदारी के हक के विषय में दूसरी ओर बराबरी का ध्यान न करना चाहिए यदि दूसरा भाई रिश्ता तोड़ता और अनुचित व्यवहार भी करता है जब भी तुम्हें सद्व्यवहार करना चाहिए, सही बुखारी में है कि

(शेष पृष्ठ १७ पर)

0522-508982

Mohd. Miyan

Jwellers

एक भरोसेमन्द सोने चान्दी के ज़ेवरात की दुकान

1-2 Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226001

अल्लाह हाज़िर है

अनुवाद मुहम्मद वसीउल्लाह हुसैनी

शियाटिका (अ़िर्कुन्नसा) का दर्द:

मैं दो साल से एक गम्भीर रोग से ग्रस्त हूं। एक दो मिनट के लिए खड़ी होती हूं तो बाईं टांग सुन हो जाती है। पांव के नाखुन से लेकर कमर तक एक नस खिंचती है, जिससे असहनीय दर्द होता है। मैं हकीमी (यूनानी) एवं एलोपैथिक उपचार करा चुका हूं, कोई आराम नहीं, आध्यात्मिक (रूहानी) उपचार भी कराया। एक स्थान पर पड़े रहने से शरीर फूलता जा रहा है। आप कोई उपचार बताइये, यह रोग क्यों होता है और उपचार कराने पर ठीक होता या नहीं ?

(रूही नवाज़ कलाबट–सवाबी)

इस मर्ज़ को अ़िर्कुन्नसा या लंगड़ी का दर्द या शियाटिका कहते हैं। इस बीमारी का बड़ा लक्षण कमर के निचले भाग में तीव्र दर्द है। दर्द कमर से लेकर टांग तक जाता है। अधिक तम्बाकू पीने, चोट लगने, पसीने में हवा लग जाने, शीतल पेय अधिक प्रयोग करने या ठंड लग जाने से यह बीमारी होती है। रीढ़ की हड्डी के मोहरे हिल जायें और पट्ठा बीच में आकर दब जाए तो पूरे पट्ठे में दर्द होता है। यह पट्ठा रीढ़ से शुरू होकर पांव तक आता है और इसमें दर्द होता है। कभी कभी झुक कर तत्काल उठने, फिसलने अथवा जोड़ों के दर्द के कारण भी यह रोग हो जाता है। इसका आधुनिक उपचार इस प्रकार किया जाता है।

आराम :

रोगी को आराम करना चाहिए, बिस्तर नर्म, गद्दे वाला न हो बल्कि सख्त होना चाहिए। लकड़ी के तख्त पर सोएं या फर्श पर बिस्तर बिछालें, इससे आराम महसूस होगा।

फिजियो थेरापी मसाज :

आजकल फिजियोथेरापी भी सफल रहती है। अस्पताल में इस का अलग विभाग होता है। फिजियोथेरापी की मशीनों पर मरीज़ को ताप से सुकून मिलता है। कुछ व्यायाम एवं मसाज करने से दर्द में कमी हो जाती है।

डाक्टर ऐसी दवाएं तजवीज़ करते हैं जो दर्द तथा मर्ज को दूर करती हैं। किसी अच्छे डाक्टर से उपचार कराना चाहिए। यूनानी में भी ऐसी दवाएं मौजूद हैं जिनसे यह तकलीफ दूर हो जाती है। आप कलौंजी साफ करके बारीक पीस कर रख लीजिए, प्रातः गर्म पानी के प्याले में एक चम्मच शहद मिलाकर उसके साथ तीन ग्राम कलौंजी प्रतिदिन खाएगा कलौंजी में मौत के अलावा हर मर्ज से शिफा है। मैं होम्योपैथिक दवा आप को लिखकर भेजदूंगी, आप प्रतिदिन ज़ैतून के तेल की मालिश कीजिए। परेशान न हों इन्शाअल्लाह आप ठीक हो जाएंगी।

चेहरे पर दाने :

मेरी उम्र १६ वर्ष है। दो साल से मेरे चेहरे पर दाने निकल रहे हैं। इन दानों के कारण मैं बहुत परेशान हूं, मुझे कोई होम्यो टोटका बताइए।

(दानियाल खान–सवाबी)

दानियाल साहिबा आप तली हुई वस्तुएं अधिक न खाइए, चिकनी चीजों से दाने अधिक निकलते हैं। बेसन के साथ चेहरा धोया कीजिए। होम्योपैथिक दवा बरबरलेस एकी फोलियम ३० शक्ति में खरीदिए। सुब्ह–शाम तीन–२ बूंदें आधी प्याली पानी में मिलाकर लीजिए। डेढ़ माह बाद बताइए क्या हाल है। गुलेमुंडी खरीद लीजिए गोल–२ फूलों के रूप में होती है। रात को १७ मुंडियां एक ग्लास पानी में भिगो दीजिए, प्रातः उनको हाथ से मल तथा छान कर एक चम्मच शहद मिलाकर पी लिया कीजिए, इससे खून साफ़ होगा, दाने नहीं निकलेंगे।

(पृष्ठ १६ का शेष)

वह शख्स सिल–ए–रहिमी करने वाला नहीं जो केवल बराबर का बदला दे।

बल्कि सिल–ए–रहिमी करने वाला वह है कि जब दूसरी ओर से रिश्तेदारी तोड़ी जाए तो यह मिलाने और जोड़ने का काम करो। (इब्नि कसीर)

पवित्र हदीस में विभिन्न ढंग से सिल–ए–रहिमी (रिश्तेदारी) की महत्वता और उस पर अज्र सवाब (पुण्य) रिश्ता काटने की निन्दा की गई और कठोर दण्ड की धमकी दी गई।

अनुवाद : हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया कि रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार (सिल–ए–रहिमी) करना, खानदान में मुहब्बत, माल में बरकत और मौत में ढील का सबब है, (मिश्कात शरीफ और तिरमिज़ी शरीफ़)

अनुवाद : हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि जो शख़्स रोज़ी (जीविका) में बढ़ोतरी और उन्नति चाहता हो और लम्बी उम्र चाहता हो तो उसे चाहिए कि रिश्तेदारों से सिल–ए–रहिमी करे।

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : *मैंने किराये पर कमरा लिया और उसमें रहा नहीं केवल मेरा ताला लगा रहा तो क्या ऐसी सूरत में मुझे किराया देना होगा ?*

उत्तर : जब आपने महीना भर के लिए घर किराया पर लिया और अपने क़ब्ज़ा में कर लिया तो महीना भर के बाद किराया देना पड़ेगा चाहे उसमें रहने का इत्तिफ़ाक हुआ हो या ख़ाली पड़ा रहा हो किराया दोनों हाल में देना होगा।

प्रश्न : *दर्ज़ी कपड़ा सी कर या रंगरेज़ रंग कर या धोबी कपड़ा धोकर लाया तो क्या बिना पैसा दिये उससे कपड़े ले सकते हैं ?*

उत्तर : दर्ज़ी कपड़ा सी कर या रंगरेज़ रंग कर या धोबी कपड़ा धोकर लाया तो उसको इख़्तियार है कि जब तक तुम से उसकी मज़दूरी न ले तब तक आप को कपड़ा ने दे बिना मज़दूरी दिये उससे ज़बरदस्ती लेना दुरुस्त नहीं।

प्रश्न : *अगर किसी ने शर्त लगा दी दर्जी से कि तुम्हीं सिलना या धोबी से कहा कि तुमही धोना तो क्या किसी दूसरे से काम करवा सकता है।*

उत्तर : अगर किसी ने यह शर्त लगा दी कि मेरा कपड़ा तुम ही सीना या तुम ही रंगना, तुम ही धोना तो वह दूसरे को नहीं दे सकता खुद ही करे, और अगर यह शर्तें नहीं की तो किसी और से भी वह काम करा सकता है।

प्रश्न : *अगर मकान किराया पर लेते समय कुछ मुद्दत नहीं बयान की कि कितने दिन के लिए रूपया दिया है या किराया नहीं मुक़र्रर किया यूं ही ले लिया या यह शर्त कर ली कि जो कुछ इसमें गिर जाएगा, वह भी हम अपने पास ही से बनवा दिया करेंगे या किसी को घर इस वादे पर दिया कि उसकी मरम्मत करा दिया करें और उसका यही किराया है यह सब सूरतें क्या सही हैं।*

उत्तर : यह सब सूरतें फ़ासिद हैं लिहाज़ा दुरुस्त नहीं।

प्रश्न : *किसी ने यह कह कर मकान किराये पर लिया कि १००० (एक हजार) रू० माहाना किराया दिया करेंगे तो क्या एक ही महीने के लिए हुआ।*

उत्तर : हां यह केवल एक ही महीने के लिए होगा और महीना के पूरा होने पर मालिक को खाली कराने का इख़्तियार होगा। अब अगर दूसरा महीना शुरू हो गया तो किराये दार को अब फिर एक ही महीने रहने का इख़्तियार होगा हां अगर यह कह दे कि मैं इतनी मुद्दत तक रहूंगा तो उतनी मुद्दत तक रहने का हक़ होगा।

प्रश्न : *किरायादार या मालिक का इन्तिकाल हो जाये तो क्या इजारा (मुआहिदा) बाक़ी रहेगा ?*

उत्तर : जब किराये पर लेने वाले और देने वाले में से कोई मर जाए तो इजारा (किरायादारी मुआहिदा) टूट जाता है।

प्रश्न : *धोबी या दर्ज़ी या किसी पेशेवर को जो चीज़ दी जाती है वह खो जाए या चोरी हो जाए तो क्या उससे उसकी क़ीमत ली जाएगी।*

उत्तर : धोबी, दर्जी या इस तरह के किसी पेशेवर को जो चीज़ दी जाती है वह अमानत होती है, अगर वह चोरी हो जाए या किसी और तरह मजबूरन खो जाए तो उनसे बदला लेना दुरुस्त नहीं मगर अगर उसने इस तरह कुन्दी की कि कपड़ा फट गया या अच्छा रेशमी कपड़ा भट्टी पर चढ़ा दिया और वह ख़राब हो गया तो उसका बदला लेना दुरुस्त है, और अगर कपड़ा खो गया और वह कहता है कि मालूम नहीं क्या हुआ तो उसका लेना भी दुरुस्त है और अगर वह कहे कि मेरे यहां चोरी हो गयी तो बदला लेना दुरुस्त नहीं ।

प्रश्न : *अगर कोई कहे कि मैंने यह चीज़ इतने दामों में बेच दी और दूसरे ने कहा कि मैंने ले ली तो वह चीज़ बिक गई या नहीं ?*

उत्तर : अगर किसी ने कहा कि मैंने यह चीज़ इतने दामों में बेच दी और दूसरे ने कहा मैंने ले ली तो वह चीज़ बिक गई और जिसने मोल ली है वही उसका मालिक बन गया और इस बिक जाने को बैअ़ कहते हैं। यह बेचने और मोल लेने का हुक्म उस वक्त है कि दोनों तरफ़ से बात चीत एक ही जगह

बैठे–बैठे हुई हो और अगर दोनों की बातों के दर्मियान में जगह बदल गई हो तो ख़रीद फ़रोख्त सही न होगी।

इसी तरह किसी ने कहा यह चीज़ पांच रूपये में दे दो उसने कहा मैंने दे दी, इससे बैअ़ नहीं हुई मगर उसके बाद अगर खरीदने वाले ने फिर कह दिया कि मैंने ले ली तो बिक गयी। इसी तरह किसी ने कहा कि यह चीज़ एक सौ में मैंने ले ली, उसने कहा ले लो तो बैअ़ हो गयी।

इसी तरह बेचने और मोल लेने में यह भी ज़रूरी है कि जो सौदा खरीदे हर तरह से मामला साफ़ कर ले कोई बात ऐसी गोल–मोल न रखे जिससे झगड़ा हो और क़ीमत भी साफ़–साफ़ तय होना चाहिए अगर दोनों में से एक बात भी अच्छी तरह मालूम और तय न होगी तो बैअ़ सही न होगी।

प्रश्न : *अगर किसी चीज़ की क़ीमत मालूम नहीं है तो उस बैअ़ या ख़रीद फ़रोख्त का क्या हुक्म है ?*

उत्तर : अगर किसी ने मुट्ठी बन्द करके कहा कि जितने दाम मेरे हाथ में हैं उतने की फुलां चीज़ दे दो और मालूम नहीं कि हाथ में क्या है, तो ऐसी बैअ़ दुरुस्त नहीं, इसी तरह किसी शहर में दो तरह के रूपये चलते हैं तो यह भी बतला दे कि फुलां रुपये के बदले में यह चीज़ लेता हूं, अगर यह न बताया तो जिस रूपये का ज़ियादा रिवाज है वही देना पड़ेगा और दोनों का रिवाज बराबर हो तो बैअ़ फ़ासिद होगी।

प्रश्न : *किसी ने कहा कि आप यह चीज़ ले लें जो दाम हों दे दीजिएगा तो ऐसी बैअ़ करना कैसा है ?*

उत्तर : किसी ने कहा कि आप यह चीज़ ले लें जो दाम होंगे आप से वाजबी ले लिए जाएंगे भला आप से ज़ियादा लूंगा, या यह कहा कि मैं क़ीमत फिर बतला दूंगा या इस तरह कहा कि जो आप का जी चाहे दे देना मैं इन्कार न करूंगा तो इन सब सूरतों में बैअ़ फासिद है।

प्रश्न : *क्या सामान केवल तौल कर ही लेना चाहिए।*

उत्तर : अनाज ग़ल्ला आदि में इख़्तियार है चाहे तौल के हिसाब से ले या यूं ही मोल करके ले ले, जैसे गेहूं एक ढेरी एक रू० में खरीदी, ढेरी में चाहे जितने गेहूं निकलें सब उसी के हैं। इसी तरह आम अमरूद, नारंगी आदि में भी इख़्तियार है कि गिन्ती के हिसाब से ले या वैसे ढेर का मोल कर ले।

इसी तरह अगर आम का एक टोकरा एक रूपये में इस शर्त पर ख़रीदा कि इसमें चार सौ आम हैं, फिर जब गिने गये तो तीन सौ ही निकले तो ख़रीदार को अख्तियार है कि ले या न ले अगर लेगा तो एक रू० पूरा न देना पड़ेगा बल्कि चार आने सैकड़ा के हिसाब से दाम देने होंगे।

इसी तरह अगर कोई ऐसा कपड़ा ख़रीदा कि उसमें से कुछ फाड़ डाले तो वह खराब हो जायेगा और खरीदते वक्त यह शर्त की थी कि यह पांच मीटर का है फिर जब नापा तो कम निकला तो दाम कम न होंगे पूरे देने पड़ेंगे, हां ऐसी सूरत में खरीदार को अख्तियार है चाहे ले या न ले और कुछ ज्यादा निकला तो वह भी उसी का है उसके बदले में दाम ज़ियादा देने पड़ेंगे।

(पृष्ठ ६ का शेष)

बिस्मिल्ला कर के खाओ दाहिने हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ। (बुख़ारी, मुस्लिम)

बच्चों को नमाज़ का हुक्म –

२४१. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया, सात साल कीउम्र में अपनेबच्चों को नमाज़ का हुक्म दो, और जब दस साल के हो जाएं तो नमाज़ छोड़ने पर उनको सजा दो और उनके बिस्तर अलग कर दो (यानी दस साल) या ज़ियादा उम्र के बच्चे एक बिस्तर पर न सोएं।

बच्चे को अदब सिखाना एक साअ़ सद्कः करने से बेहतर है–

२४२. हज़रत जाबिर बिन समुरः (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया आदमी अपने बच्चों को अदब सिखाए यह उससे बेहतर है एक साअ़ सदकः करे। (तिर्मिज़ी)

अच्छी तहज़ीब का अदब बेहतरीन तोहफ़ा है –

२४३. हज़रत अय्यूब बिन मूसा (रह०) अपने दादा के वास्त से रसूलुल्लाहि (सल्ल०) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया कोई बाप अपने बच्चे को अच्छी तहज़ीब व अदब से बेहतर कोई तोहफा नहीं देता। (तिर्मिज़ी)

संशोधन (तस्हीह़)

पिछले अंक के पृष्ठ ६ पर ह़दीस नं० २२२ का शीर्षक इस प्रकार है :– "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तंबीह" हमें खेद है कि कम्पोज़ीटर और प्रूफ़रीडर की चूक से तंबीह के स्थान पर तबाही छप गया, नऊज़ु बिल्लाहि व नस्तग़फ़िरुल्लाह। हम अपने अल्लाह से क्षमा मांगते हैं तथा अपने पाठकों से भी इस चूक पर मुआ़फ़ी चाहते हैं।

तअ़वीज़ात व अ़मल्यात की ग़लतियां

अज़ इफ़ादाते हज़रत थानवी (रह०)

इस मज़मून में अ़मल से मुराद है किसी मक़सद के लिए कोई वज़ीफ़ा पढ़ना और तअ़वीज़ से मुराद है कुर्आन व हदीस से कुछ शब्द लिख देना या अलग से कुछ शब्द लिख देना या नक़्श बना देना फिर उसको किसी मक़सद के लिए इस्तिअ़माल करना और तअ़वीज़ या अ़मल वही जाइज़ है जिसके शब्दों या नक़्श के मअ़ने मअ़लूम हों, उनके मअ़नों में शिर्क, कुफ़्र या गुनाह की बात न हो और वह जाइज़ मक़सद के लिए इस्तिअ़माल किये जाएं।

बअ़ज आ़मिल बअ़ज़ अ़मलों में साअ़त वक़्त या दिन की क़ैद लगाते हैं, बअ़ज़े चान्द के चढ़ाव उतार का लिहाज करते हैं और यह सब नुजूम में तासीर मानने के सबब (जो बातिल है) और गुनाह है। इस का तर्क वाजिब है और यह ख़याल कि यह अ़मल की शर्त है यह बिल्कुल ग़लत है मैंने ऐसे अ़मलों से यह कैदें बिल्कुल हटा दी हैं और अल्लाह के फ़ज़्ल से फ़ाइदे में कोई कमी नही पाई । अ़मल का असर ज़ियादा तर ख़याल से होता है। दिन, साअ़त की कैदें फ़ुज़ूल हैं और यह सब आ़मिलों ने गढ़े हैं जो ग़लत हैं, बातिल हैं और काबिले तर्क हैं।

अ़वाम में बअ़ज़ अ़मल जो चोर के पता लगाने के लिये जाइज़ समझे जाते हैं सो यह न तो जाइज़ हैं न इनकी बुन्याद पर किसी को चोर कहा जा सकता है। अगर इन आ़मिलों को फ़र्जी नाम बता दिये जाएं तो उन्हीं में से कोई नाम निकल आएगा जिस से साफ़ पता लगता है कि यह महज़ ख़याली चीज़ है हक़ीकत से इस का कुछ भी तअ़ल्लुक़ नहीं।

कुछ आ़मिल क़ुर्आन की आयात बे वुज़ू लिख देते हैं और बे वुज़ू आदमी के हाथ में दे देते हैं। क़ुर्आन की लिखी आयत बे वुज़ू छूना नाजाइज़ है।

अ़मल और तअ़वीज़ क़रीब क़रीब सब इजतिहादी हैं। अर्थात सोच विचार कर निकाले गये हैं। रिवायत से साबित नहीं हैं बल्कि आमिलीन ने मज़मून की मुनासिबत से हर काम के लिए मुनासिब आयात वगैरा अपनी अ़क़्ल से तजवीज़ कर ली है।

लोगों का ख़याल है कि जो आयत तअ़वीज़ में लिख दी जाएगी तो जो असर तअ़वीज़ से होगा उस आयत के पढ़ने से उतना असर न होगा इस की कोई दलील नहीं बल्कि बिला दलील महज़ एक ख़याल है। तअ़वीज लिखने का तरीक़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से साबित नहीं अलबत्ता आप का मअ़मूल था कि आप पढ़ कर दम कर दिया करते थे।

लोगों ने हर बात के लिए बस तअ़वीज़ तजवीज़ कर लिया है। तअ़वीजों के पीछे पड़ कर मरीज़ का अ़िलाज नहीं कराते यहां तक कि मरीज़ हलाक हो जाता है। आज कल लोग अपने मक़सिद में, अमराज़ दूर करने में और मुसीबतें ख़त्म करने में तअ़वीज़ गन्डों वगैरा की बड़ी क़द्र करते हैं उसके लिये कोशिशें करते हैं लेकिन जो अस्ल तदबीर है यअ़नी अल्लाह से दुआ़ उस से ग़ाफ़िल रहते हैं। मेरा तजरिबा है कि नक़्श व तअ़वीज़ में दुआ़ के बराबर असर नहीं है। हां दुआ़ को दुआ़ की तरह मांगा जाए और दुआ़ में रूकावट डालने वाली बातों से परहेज़ किया जाए।

दुआ़ के मुक़ाबले में अ़मलियात का दर्जा बहुत कम है। फिर भी लोग दुआ़ छोड़ कर तअ़वीज़ात व अ़मलियात के पीछे पड़ गये हैं। यह बात भी याद रखने की है कि अ़मलियात में दुन्यावी मकासिद के लिए जो कुछ पढ़ोगे उस पर कोई सवाब न मिलेगा और दुआ़ चाहे दुन्या के लिए करो उस पर सवाब मिलेगा।

बअ़ज़े अल्फ़ाज़ जिन के मअ़ने मअ़लूम न हों या ऐसा नक़्श जिसमें हिन्दसे (गिन्तियां) लिखे हों और यह मअ़लूम न हो कि किस चीज़ के हिन्दसे हैं। ऐसे नक़्श व तअ़वीज़ात का इस्तिअ़माल नाजाइज़ है। जिस रूक़्या की अ़िबारत के मअ़ना मअ़लूम न हों या उसके मअ़ना शरीअ़त के ख़िलाफ़ हों उसको पढ़ कर झाड़ फूंक न करे जाइज़ रूक़्ये से झाड़ फूंक करे, अल्लाह पर भरोसा करे इन्शा अल्लाह फ़ाइदा होगा। इस लिए कि अक्सर झाड़ फूंक का असर आ़मिल के यक़ीन की ताकत और झाड़ फूंक कराने वाले के इआ़तिक़ाद की कुव्वत से होता है।

कुछ आ़मिल हाज़िरात करते हैं और कहते हैं इससे जिन्नात हाज़िर होते हैं। किसी नाबालिग़ बच्चे या औरत के हाथ में कोई नक़्श रख कर या

(शेष पृष्ठ २२ पर)

सुन्दर रहन सहन

(बच्चियों की तालीम व तर्बियत)

(बारहवीं क़िस्त)

ख़ैरुन्निसा 'बेहतर'

ख़ुदा का शुक्र अदा करती रहो। उसकी रज़ामन्दी चाहो। उसके खिलाफ कोई बात न कहो। न करो। उसकी नाराज़गी की बात से तौबः करो। नमाज़ दिल लगाकर समय पर अदा करो। कलाम मजीद रोज़ पढ़ती रहो। गलतियां न होने पायें। भूला हुआ याद कर लिया करो। झूठ न बोलो। जो बात कहो सच कहो। अगर किसी बात का खौफ़ हो वह बात न कहो। आदमी से न डरो। खुदा से डरो। इन्सान अलावा इसके कि वह ख़ामोश होगा और क्या कर सकता है। खुदा की पकड़ सख़्त है मगर वह रहीम भी है। हर एक से नर्मी के साथ पेश आओ। किसी की बुराई न करो, न मुंह पर न पीछे। मुंह पर कहने से दुख होता है और पीठ पीछे कहना ग़ीबत है। अपने ऐबों पर नज़र रखो। क़सम खाने की आदत न डालो। चुपके चुपके चार के सामने बातें न करो बदगुमानी होगी। चाहे अच्छी बात हो। दो व्यक्ति जब बराबर हों और तुम कुछ देना चाहो तो बराबर दो। ज्यादा कम देने में तुम मूर्ख कहलाओगी। और कम हिस्सा वाले को अखरेगा। दो व्यक्तियों के सामने उनमें से एक की तारीफ़ न करो। आदर सत्कार बराबर करो। किसी का दिल न तोड़ो। विचार के अनुरूप न हुआ तो मलाल होगा। जिससे महब्बत करो खुदा की खुशी के लिए ।

सिलए रहिमी : (अपने परिवार वालों से प्रेम रखना और यथाशक्ति उनकी सहायता करना)

अपने रिश्तेदारों से महब्बत पैदा करो। वह अगर दुश्मनी भी करें तो तुम दोस्ती करती रहो। जो तुम्हारे साथ बुराई क़रे तुम उसके साथ भलाई करती रहो। दास्तों से तो सभी दोस्ती रखते हें लेकिन दुश्मनों के साथ भलाई खुदा की खुशी है। अपने रिश्तेदारों की मदद करो। उनका हाथ बटाती रहो वक्त पर कर्ज दो। कर्ज़ देकर एहसास न रखो। कभी तक़ाज़ा न करो। अगर वह किसी बात पर बिगड़ जायें तो तुम नर्म हो जाओ। उनके गुस्से को दफ़ा करो। बुरी बात को टाल दो। कंजूस से कभी कर्ज न लो। कंजूस का दिल छोटो होता है, वक़्त पर तुम्हें शर्मिन्दा होना पड़ेगा। बल्कि वह जो चीज़ मांगे दे सकती हो तो दे दो, वह थोड़े को बहुत समझेगा।

अमीरों से बहुत न मिलो, बेतकल्लुफी में वह बात नहीं रहती बिना बहुत चाहे न जाया करो, अगर जाओ तो कोई ऐसी बात न करो जो उनके खिलाफ हो। इधर उधर न देखती रहो। किसी बात पर आश्चर्य व्यक्त न करो। बड़ी तमीज़ से खाना खाओ। जो चीज़ तुम्हारे आगे हो वह खाओ। दूसरी तरफ हाथ न बढ़ाओ। खाते समय बहुत बातें न करो। कहीं जाओ तो खाली हाथ न जाओ। एक होशियार औरत को ज़रूर साथ ले जाओ। अकेले कहीं न जाओ। पास हो या दूर। किसी के कपड़े पहन कर न जाओ जो खुदा तुम्हें दे वही बेहतर है। मंगनी के माल से कभी नुकसान भी होता है और दुख भी।

आमदनी से जियादा खर्च न करो

अगर तुम्हारी आमदनी तीन सौ रूपया है और तुम चार सौ खर्च करोगी तो आगे तुम्हें दो सौ में करना पड़ेगा। जरूरतें वही रहेंगी, रूपया कम हो जायेगा, फिर इतमीनान से नहीं खा पहन सकतीं। और यह बदनजमी (अव्यवस्था) भी कहलाती है। जो करो उसका नतीजा सोच लो। यह हदीस याद रखो।

"न बर्बाद हुआ वह आदमी जिसने अपनी हक़ीकत पहचानी।"

जो काम करो सलाह से करो। फिर इल्ज़ाम का मौका न रहेगा। जो करो हैसियत के अनुसार करो कभी परेशान न होगी। आजकल दस्तूर बेजा खर्च का है। अगर कोई इन्तेजामकार हैसियत के अनुसार करता है तो वह कंजूस कहलाता है। ऐसे बेजा खर्च से क्या हासिल कि वक्त पर दूसरों का मुहताज हो जाये। वक्त परेशानी में कटे। अगर खुदा ने तुम्हें जरूरत से ज्यादा दिया है तो तुम उसकी खुशी के काम करो जो तुम्हें आखिरत में मिले। बेजा उड़ा देने से कुछ हासिल नहीं जो तुम्हें प्राप्त हो वह तुम अपने काम से बचाकर अपने उन रिश्तेदारों पर खर्च करो जो उसके हकदार हैं कि

खुदा भी खुश हो और वह भी। इस हाशियारी से खर्च करो कि न तुम कर्जदार हो, न मर्दों को तकलीफ दो। उनसे फरमाइश न करती रहो, जो कुछ तुम्हें दें, गनीमत जानो, उन्हें आराम पहुंचाती रहो।

सद्व्यवहार और हारून रशीद की घटना –

अपने और अपने मां बाप के रिश्तेदारों से नेक बर्ताव रखो। उनकी राहत और तकलीफ में शरीक रहो। उनकी खुशी अपनी खुशी, उनका गम अपना गम समझो, खुले छिपे उनकी मदद करो। हर एक से नेकी करो। खुदा तुम पर रहम करेगा, यह गलत है नेकी बर्बाद गुनाह लाज़िम। क्या तुमने कुर्रान में नहीं देखा "नेकी का बदला नेकी है", मगर जब कि उसमें दिखावा न हो। रिया (दिखावा) से बचो। किसी की कम हैसियत पर हंसो नहीं। उसका दिल न तोड़ो। किसी का दिल न दुखाओ। किसी की अगर मेहमान हो तो उसके खाने की बुराई न करो, भले ही बे नमक की दाल हो। उसे नेमत समझ कर खाओ। खाते समय मुह न बनाओ। खाकर नाम धरना बड़ा अवगुण (ऐब) है। मालूम नहीं किस शौक में उसने पकाया हो। उसका एहसान मानो और शुक्रिया अदा करो।

हारून रशीद का किस्सा तुमने सुना होगा। एक देहाती अरब जो बहुत प्यासा था एक नहर पर पहुंचा और पानी पिया। उसे मजेदार समझकर डोल में भर लिया कि हारून रशीद को पेश करूंगा। बहुत सा इनाम पाऊंगा। यह सोचकर बादशाह की सेवा में लाया। वह दरबार में थे। किसी वजीर से कहा कि रखलो, मैं पियूंगा दूसरा न पिये। बादशाह बहुत रहमदिल थे। यह समझे कि दूसरा आदमी मज़ा चख कर उसे कुछ कह देगा तो उसे मलाल होगा। उसे बहुत सा इनआम देकर विदा किया।

किसी की चीज को बुरा कहने से दिल टूट जाता है। किसी दूसरे के घर में अपनी हुकूमत न जताओ। बेजा गिला शिकायत न करो। बच्चों के लड़ाई झगड़ों में न बोलो। नौकरों के कहने सुनने में न आओ। इससे बैर पैदा हो जाता है फिर खुद सुनकर टाल दो। ज्यादा झगड़े से भी नुकसान है। जो चीज़ तुम्हें मिल जाये वह हजार में अच्छी समझो। शायद तुम्हारे हक़ में यही बेहतर हो। किसी से हसद (ईर्ष्या) न करो। हसद वाला कभी फूलता फलता नहीं है। खुदा जिसको देना चाहता है देता है जरूर । तुम्हारे हसद करने से रोक न लेगा। हसद करने वाला ज़लील (नीच) रहता है। यह मर्ज़ लाइलाज है। अगर इलाज है तो यह है कि जिस किसी के नफा से तुम्हें हसद होता हो उसको नफा पहुंचाने की कोशिश करो और दुआ करो कि खुदा या इसे वह चीज़ दे जो मुझसे बेहतर हो। अगर तुम से ज्यादा कोई खूबी उसमें हो तो बड़ी खुशी से उसकी तारीफ दूसरों से करो। चार दिन में फिर यह मर्ज जाता रहेगा। हिर्स (लोभ) से बचो। मोर्चा जैसे लोहे का रवा लेता है उसी तरह हिर्स ईमान को। अपने से कमतर को देखो। फिर तुम्हें खुदा से शिकायत न होगी। जो खुदा ने दिया उसका शुक्र अदा करो। उस पर सन्तोष करो। जिससे मिलो सच्चे दिल से मिलो। हर मौके पर दोस्त रखो। खुदा से डरो। सब उसी के बन्दे हैं। जिसे चाहे इज़्ज़त दे जिसे चाहे जिल्लत। बल्कि अगर तुम कर सको तो उस वक्त दूसरों की मदद करो, खुदा तुम्हारी भी मदद करेगा। बेकसों पर रहम करो, खुदा तुम पर रहम करेगा।

करो मेहरबानी तुम अहले जमीं पर,
खुदा मेहरबां होगा अर्शे बरीं पर।

(जारी)

प्रस्तुति : मो० हसन अंसारी

(पृष्ठ २० का शेष)

उसके अगूंठे के नाखून पर एक ख़ास सियाही मल कर उस पर नज़र जमाने को कहते है। फिर उससे सुवाल करते हैं कि क्या दिखा? नज़र जमाने के सबब फिर उस पर सुवाल किये जाने से उसके तख़य्युल में सुवाल के मुताबिक़ उसको बअ़ज़ शक्लें नज़र आने लगती हैं जिनके बारे में कहा जाता हे कि यह जिन्न हैं। यह निरा धोखा है फरेब है (ज़हीन और तेज बच्चों को कुछ नहीं नज़र आएगा)

बअ़ज़े अ़म्लियात में तस्वीरें बनाई जाती हैं, बअ़ज़े क़ुर्आन उलटा पढ़ते हैं। बअ़ज़े क़ुर्आन के अन्दर दूसरी आ़बरतें इस तौर से दाख़िल कर देते हैं कि क़ुर्आन का नज़्म बिगड़ जाता है। यह सब ह़राम और गुनाह है।

0522-508982
अनस
मैरेज हाल
बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हमसे सम्पर्क करें ।
कपूर मार्केट (मलिक मार्किट)
विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

क्रोध की वास्तविकता और उसका इलाज

(हदीस की रोशनी में)

शाह मुहम्मद जाफ़र

बुख़ारी, मुस्लिम और मुवत्ता में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक कथन बयान किया गया है "बहादुर वह नहीं जो किसी को पछाड़ दे, बहादुर तो वह है जो क्रोध के समय अपने पर काबू रखे।"

मनुष्य के अन्दर खुदा ने अनगिनत प्रकार की विनाशकारी तथा रचनात्मक शक्तियां रखी हैं। विनाशकारी और रचनात्मक शक्तियों की तकसीम केवल विश्वास पर निर्भर है और उनका निश्चय केवल इन शक्तियों की कार्यकुशलता से होता है अन्यथा वास्तव में कोई शक्ति न रचनात्मक है न विनाशकारी। जिस शक्ति को विनाश में लगाया जाए विनाशकारी है। हां यह सही है कि कुछ शक्तियां ऐसी हैं जिन का अधिकांश प्रयोग एक पहलू में होता है चाहे वह विनाशकारी हों या रचनात्मक।

क्रोध भी इसी प्रकार की एक विशेष जज़्बाती शक्ति है। एक एकाकी प्रकार की शक्ति है जो खुद को दिखाई नहीं दे सकती अलबत्ता इस का प्रदर्शन दिखाई दे जाता है। खून का अन्दर अन्दर खौलना, दिमागी संतुलन का बिगड़ जाना, सांस का तेज़ होना, आंखों का लाल हो जाना, नथुनों का फड़कना, शरीर के अंगों में कपकपी पैदा होना, ज़बान से अनुचित शब्द निकलना, आवाज़ का ऊंचा होना, मारपीट पर उतर आना आदि .... यह वह तमाम चीज़ें हैं जो क्रोध का प्रदर्शन हैं, संकेत और लक्षण हैं। यह चीज़ें स्वयं क्रोध नहीं। क्रोध तो केवल एक न दिखाई देने वाला जज्बा या रुज्हान (प्रवृत्ति) है जो अन्दर से पैदा होता है और अपने लक्षण को विभिन्न रूप में प्रकट करता है। यह जज्बा चूंकि साधारणतः मांसिक संतुलन खो देता है इस लिए यह कहना ग़लत नहीं कि इस की गिनती उन जज़्बाती शक्तियों में है जिन का प्रायः प्रयोग ही गलत होता है और इस का अधिकतर नतीजा विनाश ही के रूप में प्रकट होता है। फिर भी यदि इंसान चाहे तो अपनी इस शैतानी शक्ति को रहमानी शक्तियों के अनुरूप कर सकता है और इससे विनाश के बजाए रचनात्मक काम ले सकता है इस हदीस में इसी की ओर मार्गदर्शन किया गया है। इसके लिए बड़ा प्यारा अन्दाज़ अपनाया गया है।

पहली चीज़ तो यह है कि बहादुरी और ज़ोरे बाजू एक ऐसी उच्च विशेषता है जिस की हर एक को अभिलाषा होती है और वास्तव में यह एक बहुत ही उच्च गुण है शर्त यह है कि इस का प्रयोग सही हो। आप देखिए शक्ति व बहादुरी का अर्थ यही होता है कि अपने विरोधी को कुश्ती में पछाड़ा दिया जाए। कुश्ती में पछाड़ने को बाहुबल से अलग तो नहीं किया जा सकता लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस शक्ति व बाहुबल का एक नया विचार देते हैं कि किसी दूसरे को पछाड़ देना बहादुरी और ज़ोर आवरी नहीं बल्कि वास्तविक वीरता और शक्ति यह है कि अपने आप को क़ाबू में कर लो। अपने को काबू में करने का अवसर कब आता है ? उस समय जब आप के अन्दर विनाशकारी और रचनात्मक शक्तियों में जंग हो रही हो। एक तरफ़ क्रोध हो, बदले की भावना हो बुरी इच्छाएं (वास्ना) इंट का जवाब पत्थर से देने की मांग कर रही हो दूसरी तरफ़ रहमानी इच्छा, क्षमा की शक्ति और नेक जज़्बात, दिल, जबान और शरीर के अंगों पर क़ाबू रखने की मांग कर रही हो। इस अन्दरूनी जंग के समय यदि अपनी शैतानी इच्छाओं को प्रास्त कर लिया जाए तो निःसन्देह इस बहादुरी का दर्जा कुश्ती में पछाड़ देने की तुलना में वही होगा जो जिहाद अकबर का जिहादे असगर के मुकाबले में है। अर्थात क्रोध की भावना को समाप्त नहीं करना है बल्कि उससे एक रचनात्मक काम लेना है और वह है कि इस शैतानी शक्ति को रहमानी शक्ति से मिलाकर अपनी बुरी इच्छाओं के विरुद्ध प्रयोग करना है या यूं कहिए कि क्रोध को दूसरों के बजाए अपने आप पर उतारना और इस बात पर क्रोध करना है कि मुझे क्रोध क्यों आया? और अब क्रोध का सही प्रयोग क्या हो सकता है।

यह तो एक स्वभाव है जो इस हदीस में बयान किया गया है लेकिन हुजूर सल्ल० ने केवल इतना ही नहीं

किया कि केवल सिद्धान्त देकर छोड़ दिया बल्कि विभिन्न अन्दाज़ से इस शैतानी भावना को दबाने के तरीक़े भी बताए हैं और बाज़ ऐसे ऐसे स्थानों को चिन्हित भी किया गया है जहां क्रोध की भावनाओं पर क़ाबू रखने का नतीजा बहुत अप्रिय और दूरगामी भी हो सकता है। कुछ उदाहरण पेश है –

हज़रत अबू वाएल "अ़तीया" का कथन बयान करते हैं –"मुझे (अ़तीया) को हुजूर (सल्ल०) ने फरमाया क्रोध शैतानी क्रिया है। शैतान आग से पैदा हुआ है और आग पानी से बुझती है अतएव क्रोध आए तो वुज़ू कर लो।" यह बड़ा साइंटिफिक भी है और स्वाभाविक भी। क्रोध वास्तव में आग होता है जो खून में तेजी जलन और गर्मी पैदा करता है। दिल की धड़कन को और सांस की रफ़्तार को तेज कर के मांसिक सन्तुलन को बिगाड़ देता है। इस खराबी को दूर करने के लिए सब से पहला क़दम यह है कि उसमें ठंडक पहुंचा कर उसे संतुलित किया जाए। जब वुज़ू किया जाएगा तो इससे दो लाभ होंगे एक यह कि स्वाभाविक रूप से विचारों का रुख बदल जाएगा और दूसरे पानी की ठंडक से खून की तेज़ी संतुलित हो जाएगी।

हज़रत सलमान (रज़ि०) से बुखारी, मुस्लिम और अबूदाऊद में बयान किया गया है कि दो व्यक्तियों ने हुजूर (सल्ल०) के सामने आपस में गाली ग़लोज की। एक व्यक्ति का चेहरा गाली देते समय क्रोध से लाल हो रहा था, हुजूर (सल्ल०) ने दूसरे से फरमाया कि –

"मुझे ऐसा कलाम दिया गया है कि अगर वह ज़बान से कहें (अर्थात इस सच्चाई का क़ाइल भी हो जाए) तो अभी उसका क्रोध जाता रहे अगर वह "अऊज़बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम" कहे तो उसका क्रोध दूर हो जाए। यहां पर हिकमते नबवी (सल्ल०) ग़ौर करने के काबिल है कि हुजूर ने उस क्रोध करने वाले को न तो खुद कुछ फरमाया न किसी दूसरे को आदेश दिया कि वह जाकर यह बात कह दे इसकी वजह यह है कि ठीक क्रोध की दशा में समझाने का कभी कभी उलटा प्रभाव पड़ता है।

दूसरी वास्तविकता इस हदीस में यह भी है कि क्रोध एक शैतानी जज़्बा है इस लिए इसका इलाज यह बताया गया कि शैताने रजीम से अल्लाह की पनाह मांगी जाए। यहां केवल कुछ शब्दों की तकरार (पुनरावृत्त) नहीं है बल्कि इस सच्चाई पर ग़ौर करने की आदत डलवाना है कि क्रोध के समय बहुदा इंसान अन्धा हो जाता है और उसको यह ख़याल ही नहीं आता कि क्रोध कर रहा है और यह एक बुरी चीज़ है। इस लिए सब से पहले यह एहसास होना चाहिए कि हमारा यह क़दम ग़लत है इसके बाद ही बुरे भले नतीजे पर ग़ौर किया जा सकता है। फिर इस ग़ौर के बाद जब उसे यह जानकारी होगी कि हम इस समय शैतान के फंदे में आ गए हैं और उससे बाहर निकलना ज़रूरी है तो उससे अल्लाह की पनाह मांगेगा और अवश्य ही उसके क्रोध में कमी आएगी। अक्सर बुराई उस समय तक क़ाइम रहती है जब तक कि उसकी ख़राबी और खराब नतीजे का एहसास न हो और अ़ऊज़ुबिल्लाहि पढ़ने और उस पर गौर करने के बाद यह एहसास पैदा हो जाता है और ध्यान हटाने में इस से बहुत मदद मिलती है।

अहमद बिन हंबल मुस्नद में और तबरानी, कबीर में नकल करते हैं कि हुजूर (सल्ल०) ने तीन बार तकरार से यह शब्द दुहराए कि अगर किसी को गुस्सा आए तो चुप रहे" यह कोई जरूरी नहीं कि क्रोध के समय चुप रहने से क्रोध में कमी आजाए मगर उससे दो बड़े लाभ होते हैं। एक तो यह कि क्रोध के समय जो अनुचित वाक्य निकलते हैं वह जबान पर न आएंगे। दूसरा लाभ यह है कि जिस पर गुस्सा उतारा जाता है अगर वह कोई जवाब दे तो क्रोध और बढ़ेगा। इस प्रकार सुवाल व जवाब में बात बढ़ते बढ़ते बहुत बुरे नतीजे पैदा कर सकती है। इसलिए क्रोध में चुप रहने से बहुत से फितने दब जाते हैं और गुस्से पर ग़ौर करने का मौक़ा मिल जाता है और अपने पर क़ाबू पालेने की सम्भावना बढ़ जाती है।

लेकिन यह याद रखना चाहिए कि क्रोध के समय चुप रहने का अर्थ कदापि यह नहीं कि ज़बान से तो गुस्सा न किया जाए और दिल में रख कर अपने खून को खौलाया जाता रहे। यह ख़ामोशी केवल इस लिए कि ज़बान की राह से अधिक क्रोध की सम्भावना न बाक़ी रहे और इसके बाद क्रोध में भी धीरे धीरे कमी आ जाएगी। •

अतीया रज़ि० के पिता से एक फरमाने नबवी (सल्ल०) मुस्नद अहमद और कबीर तबरानी में यूं बयान किया गया है कि –

"अगर किसी सुलतान पर गुस्सा सवार हो तो समझ लो कि शैतान

(शेष पृष्ठ २६ पर)

गुलिस्तां बोस्तां

मो० हसन अंसारी

गुलिस्तां और बोस्तां फारसी भाषा के दो विश्व विख्यात ग्रन्थ हैं इनकी रचना सातवीं सदी हिज्री के मध्य में शेख मुस्लेहुद्दीन सअ़दी शीराज़ी ने की। शेख़ सअ़दी ने गुलिस्तां की रचना का वर्ष स्वयं सन् ६५६ हिज्री लिखा है और बोस्तां का सन् ६५५ हिज्री। और इन की रचना का कारण स्वयं शेख सअदी ने यों बयान किया है:

"उम्र के पचास साल बीत गये तो एक रात मुझे यह सोचकर अफ़सोस हुआ कि पचास साल की यह उम्र तलफ़ व तबाह हुई और कुछ न किया, अब तू इस लम्बे ख्वाब से जाग और कुछ कर। शर्मिन्दा वह व्यक्ति कि इस दुनिया से गया और कुछ काम न किया। जो भी इस दुनिया में आया एक इमारत बनाई जब मर गया दूसरे के लिए इमारत खाली कर दी और इस दूसरे ने उसी तरह हविस पकाई और कोई यह इमारत सर पर न ले गया। यह फानी और मिट जाने वाली दुन्या जी लगाने की नहीं। नेक हो या बद आखिरकार सब मरेंगे। बेहतर है कि जो नेकी करके मरे। यह उम्र बर्फ की तरह और भादौं की धूप के समान है। थोड़ी सी रही है उसे सुवारथ कर ले। जिस व्यक्ति ने अपनी खेती कच्ची पकाई खाई, वह फसल क्या काटेगा यह सोचकर मैं ने घर के कोने में बैठकर, दुन्या में जो कुछ देखा और सुना उसे लिखना शुरू किया। मैंने अपने आप से कहा कि अब ताकत तुझको बात करने की है, सो कह ऐ भाई साथ खुशी के कि कल जब मौत आयेगी तो ज़बान बन्द हो जायेगी। अकलमन्द हुनर वाले की ज़बान ख़ज़ाने की दरवाजे की कुन्जी है। अगर दवाज़ा बन्द हो, क्या जाने कोई कि यह दुकान जौहरी की है या बिसाती की। अगरचः अकलमन्द के आगे खामोश रहना अदब है मगर मसलहत के वक्त बेहतर है कि बीच बात के कोशिश करे तू। दो चीज़ें कम अक़्ली की हैं – चुप रहना बोलने के वक्त और बोलना चुप रहने के वक्त।"

शीराज़ दक्षिणी पश्चिमी ईरान का एक मशहूर ऐतिहासिक शहर है जहां के शेख सअदी रहने वाले थे और 'सअदी' उन का उपनाम है।

गुलिस्तां का अर्थ है बाग और बोस्तां का अर्थ है फुलवारी। हिकायत का अर्थ है किस्सा, कहानी जिस से कोई नसीहत मिलती हो। इन दोनों किताबों की रचना का उद्देश्य क़िस्सा कहानी और मिसाल व बात से नसीहत भरी बातें बताना है। शेख सअदी कहते हैं, "मुराद हमारी नसीहत थी और कही हमने।"

गुलिस्तां के आठ अध्याय हैं जो इस प्रकार हैं –

१. अध्याय एक बादशाहों के किरदार के बारे में ।
२. अध्याय दो फ़कीरों के अख़लाक़ के बारे में ।
३. अध्याय तीन सन्तोष के महत्व के बारे में।
४. अध्याय चार चुप रहने के फायदे।
५. अध्याय पांच महब्बत और जवानी के बारे में।
६. अध्याय छः बुढ़ापा के बारे में।
७. अध्याय सात तरबियत की तासीर।
८. अध्याय आठ सत्संग (सुहबत) के आदाब (तरीक़े)।

बोस्तां के दस अध्याय हैं जो इस प्रकार हैं –

१. अध्याय एक इन्साफ और अ़क़्ल और बादशाहत की तदबीर।
२. अध्याय दो एहसान के बयान में।
३. अध्याय तीन प्रेम के बयान में।
४. अध्याय चार विनय और विनम्रता के बयान में।
५. अध्याय पांच अल्लाह की खुशनूदी व रज़ा के बयान में।
६. अध्याय छः क़नाअ़त (सन्तोष) के बयान में।
७. अध्याय सात तालीम व तरबियत के बयान में।
८. अध्याय आठ शुक्र (आभार) के बयान में।
९. अध्याय नौ तौबः के बयान में।
१०. अध्याय दस दुआ के बयान में।

बोस्तां में एक जगह शेख़ सअदी ने इसे मोती से भरा हुआ नामदार खजाना की संज्ञा दी है। गुलिस्तां के बारे में वह कहते है, "फूलों से भरा एक थाल तेरे किस काम आयेगा? मेरी गुलिस्तां से एक पन्ना (वरक) ले जा। फूल बहुत रहा तो पांच छः दिन रहेगा और यह किताब गुलिस्तां हमेशा हरी भरी रहेगी।" गुलिस्तां–बोस्तां का

दुनिया की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

आज समाज में जो बुराइयां व्याप्त हैं जिन खराबियों में समाज लिप्त है, और जिन के होते हुए सभ्य संसार उठान की ओर नहीं पतन की ओर तेजी से जा रहा है, उस से बचने के लिए एक उपाय यह भी है कि रचनात्मक साहित्य को आम किया जाये। राजा भ्रतृहरि के नीतिशतक और पंचतन्त्र की कहानियों की तरह गुलिस्तां और बोस्तां की हिकायतों को क्षेत्रीय भाषाओं में अनुदित कर इन्हें आम करने की जरूरत है और आवश्यकतानुसार पूर्व माध्यमिक और माध्यमिक स्तर व डिग्री कक्षाओं के पाठ्यक्रमों में भी इन के कुछ अंश शामिल किये जाने चाहिए।

मो० हसन अंसारी

(पृष्ठ २४ का शेष)

मुसल्लत हो गया।"

यह हदीस भी बड़ी महत्वपूर्ण है। जो व्यक्ति जिस मर्तबे का होगा, उसी मर्तबे का प्रभाव भी उस के क्रोध से उत्पन्न होगा। एक बच्चे का क्रोध और होता है, मां बाप का क्रोध और होता है, काज़ी (जज) का क्रोध और प्रभाव रखता है, देश के शासक के क्रोध का प्रभाव और होता है। कुछ क्रोध बिल्कुल ज़ाती होते हैं। इसी लिए विशेष रूप से कहा गया है कि अगर किसी देश के शासक पर गुस्सा सवार हो तो समझ लेना चाहिए कि शैतान की सबसे बड़ी मुराद पूरी हुई क्योंकि उसका प्रभाव सीमित नहीं रहेगा बल्कि पूरे के पूरे समुदाय पर पड़ेगा। स्पष्ट है कि क्रोध में मांसिक संतुलन साधारणतः सही नहीं रहता, इसलिए शासक का एक गलत इशारा पूरी कौम को तबाह कर सकता है यही कारण है कि काजी को भी इससे सचेत किया गया है। हज़रत अबूबक्र का यह कथन बयान किया गया है कि –

"क्रोध की दशा में कोई (काजी या न्यायधीश) दो आदमियों के बीच कोई फ़ैसला न करे।"

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

न कड़वा बन कि जो चखे सो थूके
न मीठा बन कि चट कर जाएं भूखे

जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये गये उनको मुर्दा मत कहो वह तो ज़िन्दा हैं लेकिन तुम (उनकी ज़िन्दगी को) समझ नहीं पा रहे हो।
पवित्र कुर्आन २:१५४

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Deals :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Deals in :
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki, Chowk, Lucknow- 2260063

MOHD. ASLAM
(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

सिल–ए–रहिमी (रिश्ता जोड़ने) का अर्थ एवं उसका महत्व

मुफ़्ती स० अब्दुर्रहीम लाजपूरी

शब्द "अरहाम" बहुवचन है "रहिम" का, रहिम बच्चे दानी को कहते हैं जिसमें जन्म से पहले मां के पेट में बच्चा रहता है, अतः रिश्ते का सम्बन्ध यह "रहिम" ही है इसलिए इस श्रृंखला के सम्बन्ध को जोड़े रखने को सिल–ए–रहिमी (रिश्ता जोड़ना) और रिश्तेदारी की बुनियाद पर जो स्वाभाविक तौर सिल–ए–रहिमी पर सम्बन्ध पैदा हो गया है उनकी ओर ध्यान न देने को "क़तअ़े रहिमी" (रिश्ता तोड़ने) शब्दार्थ किया जाता है। हदीस शरीफ में "सिल–ए–रहिमी" पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है, अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने फरमाया है : जिसको यह बात अच्छी लगे कि उसके जीविका में वृद्ध हो और उसकी आयु लम्बी हो उसे चाहिए कि 'सिल–ए–रहिमी" करे।

इस हदीस से दो बड़े महत्वपूर्ण लाभ मालूम हुये, आखिरत (परलोक) का सवाब (पुण्य) तो है ही दुनिया में भी सिल–ए–रहिमी (रिश्ता जोड़ने) का लाभ है कि जीविका की संकीर्णता दूर होती है और आयु में बरकत होती है।

अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब मदीना तशरीफ लाए और मैं आपकी सेवा में उपस्थित हुआ तो आप स० के वह मुबारक शब्द जो सर्व प्रथम मेरे कानों में पड़े यह थे:– लोगो ! एक दूसरे को अधिकाधिक सलाम किया करो, अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए लोगों को खाना खिलाया करो, "सिल–ए–रहिमी" किया करो, और ऐसे समय में नमाज़ की ओर पहल किया करो जबकि साधारणतः लोग निद्रा में विलीन हों, याद रखो इन बातों पर कार्यान्वित होकर तुम बिना रूकावट कुशलता पूर्वक जन्नत में पहुंच जाओगे।

एक और हदीस में है कि उम्मुल मोमिनीन (ईमानवालों की मां) हज़रत मैमूना रज़ि० ने अपनी एक बांदी (सेविका) को आजाद कर दिया था, जब नबी करीम सल्ल० से इसका वर्णन किया तो आप स० ने फरमाया :– यदि तुम अपने मांमू को दे देतीं तो अधिक सवाब (पुण्य) होता,

इस्लाम धर्म में गुलाम, बांदी आजाद करने का बहुत प्रलोभन है और उसे अति पुण्य हेतु कार्य बताया गया है परन्तु सिल–ए–रहिमी का कार्य उच्चकोटि श्रेणी का है।

इसी अर्थ में सहायता करना केवल सदकः (दान) ही है, और अपने किसी नातेदार की सहायता करना दो बातों पर सम्मिलित है एक सदकः (दान) दूसरा। "सिल–ए–रहिमी"

केवल खर्च के परिवर्तन में दो प्रकार का सवाब (पुण्य) मिल जाता है।

इसके विपरीत नाता तोड़ने के विषय में जो कठोर प्रकोप है उसका वर्णन बहुत सी हदीस में है इसका अनुमान निम्नलिखित दो हदीसों से कीजिए ।

आप स० का कथन है:

१. जो मनुष्य नाते के अधिकरों की रक्षा नही करता वह जन्नत में नहीं जाएगा। (मिश्कात–पृ०४१६)

२. उस कौम पर अल्लाह की "रहिमत" नहीं उतरेगी, जिस में कोई क़तआ़ रहिमी करने वाला अर्थात नाता काटने वाला मौजूद हो।

अन्त में, दिलों में हुकूक (अधिकारों) के पूर्ण करने की भावना उत्पन्न करने के लिए फरमाया :

अल्लाह तआला तुम पर निरक्षक है जो तुम्हारे दिलों और विचारों से पूर्णरूप से सचेत है।

यदि किसी ने परम्परा के तौर पर लज्जित होकर कोई काम कर भी दिया परन्तु उसके हृदय में स्वार्थ त्याग नहीं है और सेवा की भावना नहीं है तो उसका काम स्वीकृत योग्य नहीं है। इसी से अल्लाह तआला से डरने की वजह भी मालूम हो गई है कि वह सदैव सबका निरक्षक है, कुरआन शरीफ़ की यह सामान्य शैली है कि कानून को राजकीय कानून की भाषा में नहीं वर्णन करता है बल्कि शिक्षा और प्रेम की भावना से वर्णन करता है, कानून के वृत्तांत के साथ साथ हृदय और मस्तिष्क का प्रशिक्षण भी कुर्आन करता है (मआरिफुल कुर्आन पृ. २८०–२८२,

मुफ़्ती मु० शफ़ी)

तफ़सीर माजिदी में है "अल, अरहाम" रहिम का बहुवचन है जिसका अर्थ बहुत विस्तृत है, सम्पूर्ण नातेदार रिश्तेदार और कुटुंब के सब लोग इसके अन्दर आ जाते हैं।

भलीभांति यह बात ध्यान में बिठा ली जाए कि कुर्आन की सूरः निसा, जहां 'अल–अरहाम" का वर्णन है वहां इस शब्द को अल्लाह से जोड़ा गया है यह है नाते और रिश्ते की महत्वता इस्लाम में –वास्तव में उम्मत की सामूहिक व्यवस्था की आधारशिला शरीअ़त ने नातेदारी अथवा "रहिम" को माना है। नाते वालों, रिश्तेवालों, कुटुंबवालों और बिरादरी वालों के साथ सद्व्यवहार इस्लाम में द्वितीय श्रेणी पर नहीं है बल्कि प्रथम श्रेणी पर इसको महत्व प्राप्त है।

बैजावी और जस्सास जैसी तफ़सीर की महत्वपूर्ण पुस्तकों से इसकी पुष्टि होती है।

हदीस शरीफ़ में आया है :– "रहिम" अर्श इलाही से लटका हुआ दुआ करता रहता है कि जो मुझे जोड़े रखे अलाह उसे जोड़े रहे और जो मुझे काटे अल्लाह उसे काटे।

फुकहा (इस्लामी धर्म शास्त्र के विज्ञाता) इस पर सहमत हैं कि रिश्ते का लिहाज (आदर) वाजिब (अनिवार्य) है और रिश्ते का काटना जुर्म (अपराध) है। (कुरतुबी)

बेशक अल्लहा तआ़ला तुम्हारे ऊपर निगरां (निरक्षक) है। (कुर्आन शरीफ)

(तुम्हारे निजी, घरेलू, सामूहिक, सम्पूर्ण सम्बन्धों पर अल्लाह तआला निरक्षक है)यदि हर समय इसका ध्यान रहे कि हमारे प्रत्येक छोटे बड़े काम को अल्लाह तआला देख रहा है तो उम्मत के सारे लोगों का घरेलू जीवन सुखमय और आनन्दमय हो जाये। (तफ़सीर माजिदी भाग द्वितीय पृ. ३,४)

दूसरी आयत का अनुवाद : –

और तुम अल्लाह तआला की इबादत इख्तियार करो और उसके साथ किसी चीज को शरीक मत करो और मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव करो, और नातेवालों के साथ भी और अनाथों के साथ भी और निर्धनों के साथ भी और करीब वाले पड़ोसी के साथ भी और दूर वाले पड़ोसी के साथभी और पास बैठने वालों के साथ भी और मुसाफिरों के साथ भी और उनके साथ भी जो तुम्हारे मालिकाना क़ब्जे में है, बेशक अल्लाह तआला ऐसे लोगों से मुहब्बत नहीं रखते जो अपने को बड़ा समझते हों, शेखी (बड़ाई) की बातें करते हों। (अनुवाद हज़रत थानवी र०)

यह आयत मुबारक भी सम्बन्धों के वर्णन में बड़ी व्यापक है, सर्वप्रथम अल्लाह तआला का हक (अधिकार) का वर्णन फिर माता पिता का फिर क्रमानुसार सब रिश्तेदारों और मुहताजों का ..... तफ़सीर माजिदी में है : ध्यान करके देख लिया जाये कि अच्छे बर्ताव की चेतावनी मां बाप से लेकर गुलामों और बांदियों, तात्पर्य समाज के प्रत्येक वर्ग के साथ है फिर अल्लाह की इबादत के पश्चात ही इसका आदेश दिया गया है – दुन्या की किसी आसमानी किताब में ऐसी अनुपम शिक्षाका उदाहरण मिलेगा ? इसके साथ अन्वेषकों की यह व्याख्या भी सम्मिलित की जाये कि यदि रिश्तदार काफिर भी हों तब भी उनके साथ उपकार किया जाये, परन्तु मुसलमानों का अधिकार इस्लाम के कारण उनसे अधिक होगा – (थानवी) (तफ़सीरे माजिदी)

मआ़रिफुल कुर्आन में है :–

अधिकारों के विवरण से पहले अल्लाह तआला का आज्ञा पालन इबादत, तौहीद (अद्वैतवाद) का विषय इस प्रकार कहा गया है: अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को इबादत में शरीक न ठहराओ – उसके पश्चात सम्पूर्ण नाते वालों और सम्बन्ध वालों में भी प्रथम मां बाप के अधिकारों का वर्णन किया गया है, अल्लाह तआला ने अपनी इबादत और अपने अधिकारों के समीप मां बाप के अधिकरों का वर्णन करके इसकी ओर भी संकेत कर दिया कि वास्तव में सम्पूर्ण उपकार और पुरस्कार अल्लाह तआला के पश्चात अत्यधिक उपकार मनुष्य पर उसके माता पिता की ओर से हैं क्यों कि संसार में उसके विद्यमान होने का कारण वही माता पिता हैं, जन्म से लेकर जवान होने तक जितने कठिन अवसर हैं उनका सबसे प्रत्यक्ष रूप से माता पिता ही उसके अस्तित्व, उसके उन्नति, विकास के जिम्मेदार हैं इसलिए कुर्आन शरीफ में अन्य अवसर पर माता पिता के अधिकारों को अल्लाह तआला की इबादत और आज्ञा पालन के पश्चात ही उल्लेख है, एक स्थान पर है :

अर्थात मुझे धन्यवाद दो और अपने माता पिता को धन्यवाद दो।

(सूरः लुकमान आयत नं. १४)

इसी अर्थ को सूरः बकरह की आयत नं० ८३ में बताया गया है इन दोनों आयतों में माता पिता के विषय में यह नहीं कहा गया कि उनके

अधिकार पूरे करो अथवा उनकी सेवा करो।

बल्कि शब्द एहसान (उपकार) लाया गया है, जिसके साधारण अर्थ में यह भी प्रविष्ट है कि आवश्यकतानुसार उनके भरण पोषण में अपना माल खर्च करें और यह भी प्रविष्ट है कि जैसी आवश्यकता हो उसके अनुसार शारीरिक सेवाएं प्रस्तुत करें, यह भी प्रविष्ट है कि उनके साथ बात चीत में दुर्वचन न करें जिससे उनके सम्मान में कमी आए, कोई ऐसा शब्द न कहें जिससे उनका दिल टूटे, उनके मित्रों एवं सम्बन्धियों से भी कोई ऐसा बर्ताव न करें जिससे माता और पिता का दिल दुखे, बल्कि उनको आराम पहुंचाने और प्रसन्न करने के लिए जो उपाय करने पड़ें उनको पूरा किया जाये, यहां तक कि यदि माता पिता ने सन्तान के साथ अच्छा बर्ताव करने में कमी की तब भी सन्तान के लिए उचित नहीं कि माता पिता के साथ बुरा बर्ताव करे।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने दस वसीयतें फरमाई थीं, एक यह कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराओ यद्यपि तुम्हें कत्ल कर दिया जाये अथवा आग में जला दिया जाये। दूसरे यह कि माता पिता के हृदय को दुख न पहुंचाओ और उनकी अवज्ञा न करो यद्यपि यह आदेश दें कि तुम अपने घर वालों और माल को छोड़ दो। (मुसनद अहमद)

रसूल करीम सल्ल० के आदेशों में जिस प्रकार माता पिता के आज्ञापलन और उनके साथ सद्व्यवहार करने की चेतावनी है उसी प्रकार अनगिनत उत्तमता और उच्चकोटि के पुण्य का उल्लेख है।

बुखारी और मुस्लिम की एक हदीस में है कि नबी करीम सल्ल० ने फरमाया कि जो मनुष्य यह चाहे कि उसकी जीविका और आयु में बरकत हो उसको चाहिए कि सिल–ए–रहिमी' करे अर्थात अपने नातेदारों के हुकूक (अधिकार) पूरे करे।"

तिरमिज़ी की एक रवायत में है कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता बाप की प्रसन्नता में है और अल्लाह तआला की अप्रसन्नता बाप की अप्रसन्नता में है।

बैहक़ी ने रवायत किया है कि रसूल करीम सल्ल० ने फरमाया कि जो लड़का अपने मां बाप का अनुयायी और आज्ञाकारी हो वह प्रत्येक दृष्टि में उसको हज मकबूल (स्वीकार किया हुआ हज) का सवाब (पुण्य) मिलता है।

बैहिकी ही की रवायत में है कि रसूल करीम सल्ल० ने फरमाया कि समस्त पापों को अल्लाह तआला क्षमा कर देते हैं परन्तु जो व्यक्ति मां बाप की अवज्ञा करे और उनका दिल दुखाए उसको आखिरत (प्रलोक) से पहले दुन्या में नाना प्रकार के कष्टों में फंसा दिया जाता है। आयत में मां बाप के बाद समस्त नातेदारों के साथ सद्व्यवहार करने का आदेश है। (मआरिफुल कुर्आन–भाग दो, पृ० नं ६,१०,११)

अनुवाद : वफादारी और नेकी केवल यह नहीं है कि तुम अपने मुंह पूरब और पच्छिम की ओर कर लो, बल्कि वफादारी तो उसकी वफादारी है जो अल्लाह, अन्तिम दिन, फरिश्तों, किताब और नबियों पर ईमान लाया और माल, उसके प्रति प्रेम के बावजूद, नातेदारों, अनाथों, मुहताजों, मुसाफिरों और मांगने वालों को दिया और गर्दने छुड़ाने में भी, और नमाज पूरा करने वाले हैं जब वचन दें, और तभी और विशेषरूप से शारीरिक कष्टों में और लड़ाई के समय में जमने वाले हैं, ऐसे ही लोग हैं जो सच्चे सिद्ध हुए और वही लोग डर रखने वाले हैं। (कुर्आन मजीद सूरः बकरह आयत नं० १७)

तफ़सीर माजिदी में है : ज़विल कुरबा ..... इस्लाम धर्म नेक कामों में खर्च करने की यह कितनी उचित और विज्ञानी श्रृंखला नियुक्त की है, आयत के इस भाग में उम्मत (मुस्लिम समुदाय) की पूर्ण आर्थिक व्यवस्था के सारांश का रूप आ गया है आर्थिक सहायता सर्वप्रथम अपने नातोदारों की करनी चाहिए यह न हो कि भाई की कोठियां तैयार हो रही हैं और बहन झोपड़े को तरस रही है, चचा के पास मोटरें हों और भतीजे के पास रक्शे से जाने के लिए पैसा भी न हो, प्रत्येक धनी को सर्व प्रथम सुविधा अपने निर्धन सम्बन्धियों, कुटुंब वालों, भाइयों, बहिनों, भतीजों, भांजों और अन्य नातेदारों की करना चाहिए, उसके बाद नंबर महल्ले के और बस्ती के शहर के अनाथ बच्चों और बच्चियों का आता है जिनका कोई संरक्षक, उत्तराधिकारी और अभिभावक नहीं रहा है। उसके बाद क्रमानुसार नंबर उम्मत (मुस्लिम समुदाय) के सामान्य निर्धनों, मुहताजों और फिर उन मुसाफिरों और यात्रियों का आता है जो सफर खर्च से वंचित हो गए हैं। और अपनी आवश्यक यात्रा नहीं कर सकते हैं अथवा बस्ती में बाहर से कोई आ गया और उसको कोई खिलाने पिलाने और ठहराने के लिए तैयार

नहीं, अन्त में जरूरत मन्द मांगने वाले हैं यदि इस सम्पूर्ण आर्थिक कार्यक्रम पर चला जाए तो उम्मत में कहीं निर्धन्ता, दरिद्रता और बेकारी पाई जा सकती है?

(तफसीर माजिदी भाग–१, पृ० ३०६)

पवित्र कुर्आन अनुवाद : लोग आप से पूछते हैं : क्या खर्च किया करें ? आप कह दीजिए कि जो कुछ माल तुम को खर्च करना हो सो मां बाप का हक है और नातेदारों का और बे बाप के बच्चों का और मुहताजों का और मुसाफिर का, और जो नेक काम करोगो सो अल्लाह तआला को उसकी भली भांत खबर है (वह उसपर सवाब देंगे)

फ़कवायद उस्मानी में है : कुछ असहाब (नबी के दोस्त) जो माल वाले थे उन्होंने आप सल्ल० से प्रश्न कियाथा कि माल में से क्या खर्च करें ? और किस पर खर्च करें उस पर यह आदेश हुआ कि थोड़ा हो या बहुत जो कुछ खुदा के लिए खर्च करो वह मां बाप रिश्तेदार, अनाथ, मुहताज और मुसाफिर के लिए है अर्थात सवाब (पुण्य) प्राप्त करने के लिए खर्च करना चाहो तो जितना चाहो करो उसकी कोई सीमा नहीं, परन्तु खर्च के जो स्थान हमने बताएं हैं उनमें खर्च करो।

पवित्र कुर्आन, अनुवाद : निःसन्देह अल्लाह तआला अदल (न्याय) का और एहसान (भलाई) का और नातेदारों की (उनके हक़) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम ध्यान दो। (सूरः नहल, आयत–६०)

आयत में तीन बातों का आदेश दिया गया है (१) अद्ल (२) एहसान (३) ईता–ए–ज़िल कुरबा (नातेदारों का उनका हक़ देना)

अद्ल का अर्थ है कि मनुष्य के तमाम अक़ाएद, आमाल, (कामों का व्योरा) अखलाक (चरित्र) मआमलात (व्यवहारिक सम्बन्ध) जजबात (मनोभव) सन्तुलन और न्या के तराजू में तुले हुए हों, घटने बढ़ने से कोई पल्ला झुकने या उठने न पाए, कठोर से कठोर शत्रु के साथ भी व्यवहार करे तो न्याय का दामन हाथ से न छूटे, उसका अन्दर बाहर समान हो, जो बात अपने लिए पसन्द न करता हो अपने भाई के लिए भी पसन्द न करे। "एहसान" का अर्थ यह है कि मनुष्य स्वयं नेकी और भलाई का रूपधारण कर दूसरों का भला चाहे। न्याय और नियम के स्थान से जरा ऊपर उठकर अपने अन्दर दया करूणा, क्षमा करने की आदत डाले कर्तव्य पूरा करने के बाद दानशीलता की ओर कदम बढ़ाए, न्याय के साथ शील भी हो, यह विश्वास करे कि जो कुछ भलाई करेगा खुदा उसे देख रहा है। उधर से भलाई का उत्तर भलाई के रूप में अवश्य मिलेगा। हदीस शरीफ में 'एहसान' का अर्थ यह बताया गया कि जब तुम अल्लाह की इबादत करो तो यह समझो कि तुम अल्लाह को देख रहे हो यदि ऐसा नहीं तो यह समझो कि अल्लाह तुम्हें देख रहा है, कुर्आन शरीफ में है : भलाई का बदला भलाई के सिवा और क्या हो सकता है। सूरः रहमान आयत–६०

यह दोनों आदतें अर्थात अद्ल, एहसान अपने और पराए मित्र और शत्रु से संबन्धित थीं, लेकिन नातेदारों का हक दूरवालों से कुछ अधिक है। कुदरत ने आपस में नातेदारों के जो सम्बन्ध बना दिये हैं उसे अनदेखा किया जाए बलिक उनके साथ गैरों से अधिक सहानुभूति और शीलता होना चाहिए। सिल–ए–रहिमी (रिश्ता जोड़ना) मूल्यतः एक नेकी और भलाई का काम है जिसका प्रयोग करीबी रिश्तेदारों और नातेदारों के साथ क्रमशः होना चाहिए, एहसान के बाद "ज़विल–कुरबा" (रिश्तेदारों) का विशेष उल्लेख करके चेतावनी दी कि अद्ल और इन्साफ़ तो सबके लिए समान है परन्तु मुरव्वत और एहसान के समय कभी कभी अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है नातों के सम्बन्ध में जो अन्तर है उसे भुला देना एक प्रकार कुदरत के स्थापित किये नियम को भुला देना है। अब इन तीनों शब्दों (अद्ल, एहसान, ईताएज़िल कुरबा) की व्यापकता को दृष्टि में रखते हुए समझदार आदमी फैसला कर सकता है कि वह कौन प्राकृतक गुणा, भलाई नेकी, दुनया में ऐसी रह गई है जो इन तीन प्राकृतिक नियमों के घेरे से बाहर हो। (फवाइद उस्मानी)

तफसीर मआरिफुल कुर्आन इदरीसी में है –

अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि नातेवालों और रिश्तेवालों को देने का अर्थात सिला–ए–रहिमी का, क्योंकि करीब वालो का हक दूर वालों से ज़ियादा है। अद्ल और इन्साफ तो दोस्त और दुश्मन सब के लिए बराबर और समान है और एहसान, मुरव्वत में कभी कभी अदल (न्याय) में अथवा एहसान (भलाई) में सम्मिलित है परन्तु "सिल–ए–रहिमी" और नाते के हक का लिहाज एक मूलतः नेकी और भलाई है और महान उपकार है इस विशेषता

के साथ "व ईताए जिल कुरबा (और नातेवालों को देना) को अलग उल्लेख किया गया, क्योंकि कुर्आन और हदीस "सिल–ए–रहिमी" से भरे पड़े हैं। हदीस में है कि शब्द "रहिमी" नाते के अर्थ में अल्लाह के प्रवित्र नाम 'रहमान" से निकला है जो "रहिम" नाते को मिलाने अल्लाह उसको मिलाने और जो "रहिम" नाते को काटे अल्लाह उसको अपनी रहमत (करूणा) से काटे, यही वजह है कि विशेष हाल में करीबी ज़रूरत मन्द रिश्तेदार का खर्चा खाना वाजिब (अनिवार्य) हो जाता है और कुछ 'सिल–ए–रहिमी' मुसतहब (उत्तम) है जैसे रिश्तेदार को हदया और तुहफा (उपहार) देना ताकि आपसी प्रेम और चाहत बाकी रहे, सारांश यह "सिला रहिमी' एहसान का महत्व अंग है क्योंकि रिश्तेरदारों को रूपये पैसे से सहायता करना और उनके साथ एहसान करना महान इबादत है जिसमें यह तीन विशेषताएं अद्ल, एहसान, सिल–ए–रहिमी एकत्रित हो गई उसकी बुद्धि शक्ति और देवी शक्ति पूर्ण और सभ्य हो गई। (मआरिफुल कुर्आन पृ. ० ११ भाग ७, सूरः नहल मौलाना मु० इदरीस)

पवित्र कुर्आन अनुवाद : और याद करो जब इसराईल की संतान से हमने वचन लिया : "अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करोगे, और मां–बाप के साथ और नातेदारों के साथ और अनाथों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करो, और यह कि लोगों से भली बात कहो और नमाज कायम करो और जकात दो।" तो तुम फिर गये, बस तुम में बचे थोड़े ही, और तुम्हारी तो मामूली आदत है वचन देकर हटजाना। (सूरः बकरा, आयत नं० ८३)

तफसीर मआरिफुल कुर्आन में है – मसअला : इस आयत से मालूम हुआ कि यह आदेश इस्लाम और पिछली शरीअतों में सम्मिलित है जिनमें अद्वैतवाद, माता पिता, नातेदारों, अनाथों और मुहताजों की सेवा, और सभी लोगों के साथ बात चीत में नर्मी और अच्छा व्यवहार करना और नमाज़ ज़कात में सम्मिलित है। मआरिफुल कुर्आन भाग–१, पृ. २५३, (मुफ़्ती मु० शफी साहब)

मआरिफुल कुर्आन इदरीसी में है – फवाइद (लाभान्वित) पहला फाइदा– मां बाप की तरबियत (देखभाल, पालन पोषण) तरबियत खुदावन्दी का एक नमूना है। मां, बाप प्रत्यक्षरूप में सांसारिक जीवन के साधनों में से एक साधन है। मां बाप औलाद के साथ जो कुछ एहसान करते हैं वह किसी गरज़ (स्वार्थ) और एवज़ (बदला) के लिए नहीं, औलाद की तरबियत (देखरेख पालन पोषण) मां बाप किसी समय दुःखित नहीं होते, औलाद के लिए जो कमाल (विशेषता) संभव हो मां बाप दिल व जान से उसकी अर्जू (लालसा) करते हैं – औलाद की उन्नति और उत्थान पर हसद (ईर्ष्या) नहीं करते, सदैव अपने से अधिक औलाद को उन्नति और उत्थान पर देखने के इच्छुक और अभिलाषी रहते हैं इसलिए अल्लाह तआला ने अपनी इबादत के बाद, मां बाप के सम्मान का आदेश दिया है और इन्हीं कारणों से माता पिता का सम्मान तमाम शरीअ़तों में अनिवार्य रही और चूंकि यह हक केवल मां बाप होने की वहज से है इसलिए "व बिल वालिदैन " (पवित्र कुर्आन) में ईमान की शर्त नहीं लगाई गई, इशारा इस तरफ है कि मां बाप का सम्मान मां बाप की हैसियत से हर हाल में वाजिब (अनिवार्य) और आवश्यक है। मां बाप चाहे काफिर और फाजिर हों या मुनाफिक और फासिक हों इस वजह से हजरत इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बाप आजर को सत्य मार्ग की ओर बुलाने और सच्चाई के समझाने में नर्मी और सम्मान का बर्ताव किया जैसा कि सूरः मरयम में विस्तार पूर्वक उल्लेख है। कुर्आन और हदीस में जगह जगह काफिर और मुशरिक मां बाप के साथ भी सद्व्यवहार और एहसान करने का आदेश दिया गया है।

दूसरा फाइदा – मुहताज तो अनाथ और मिस्कीन (दरिद्र) दोनों ही हैं मगर अनाथ कम उम्र होने की वजह से कमाने की ताकत नहीं रखता इसलिए अनाथ को मिस्कीन (दरिद्र) पर पहल दी गई।

तीसरा फाइदा – माली सहायता और एहसान अधिकतर करीबी रिश्तदारों के साथ होता है। माली सहायता हर एक के साथ संभव नहीं इसलिए "और आम लोगों से अच्छी तरह बात कहना" (कुर्आन) में दूरी सम्बन्धियों के साथ "कौली एहसान" (भली भांति बात करने) का वर्णन है इसलिए कि आवभगत और अच्छे चरित्र का व्यवहार हर एक के साथ संभव है।

चौथा फाइदा – दावत और तजकीर अर्थात सदुपदेश और नसीहत (हितोपदेश) करने के अवसर पर नर्मी और सम्मान पर ध्यान है जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया "तुम दोनों उससे नर्म बात करना, ताकि वह

नसीहत हासिल करे और डरे" (कुर्आन) अल्लाह ने फरमाया : बुलाइये अपने रब के रास्ते की तरफ हिकमत और अच्छी नसीहत के साथ, (कुर्आन), अल्लाह ने फ़रमाया : अल्लाह की ओर से रहमत की वजह से आप उनके लिए नर्म हो गए" कुर्आन, फ़रमाया अल्लाह ने : "आप अच्छे ढंग से जवाब दीजिए।" कुर्आन, तात्पर्य यह कि सदुपयोग नसीहत, तब्लीग, वाद विवाह में नर्मी और सद्व्यवहार उचित है जैसा कि आयतों के अनुवाद से स्पष्ट है।

पांचवा फाइदा : मुदारात (सत्कार, सम्मान) और मुदाहनत (चापलोसी) में अन्तर बहुत से लोग 'मुदारत' और मुदाहनत में अन्तर नहीं समझते, हांलाकि दोनों शब्दों में बड़ा अन्दर है, अपने सांसारिक और शारीरिक आराम और फाएदे को दूसरे के आराम और फाइदे के ख्याल से छोड़ देना, इसका नाम 'मुदारात' है और किसी दुन्यावी स्वार्थ के ख्याल से अपने दीन (धर्म) को छोड़ देना और उससे सुस्ती करना इसका नाम मुदाहनत है। मुदारात शरीअत में श्रेष्ठ और उत्तम और मुदाहनत कबीह (कुरूप) और दूषित है।

बात चीत में भली भांति पेश आते रहना, मानवता का कम से कम और आसान कर्तव्य है, अर्थात अच्छे चरित्र के सबके उसके साथ पेश आते रहना चाहिए, चाहे वह नेक और बद फ़ासिक़ और स्वालेह कैसा ही इन्सान हो, बस एहतियात इतनी रहे कि सुशीलता और सद्भावना से कहीं सामने वाले की बिदअ़त (दीन में नया अकीदा या नया काम) अथवा बेदेनी के समर्थन का सन्देह न हो।

मां बाप के साथ सद्व्यवहार यह है कि उनके साथ अच्छा जीवन व्यतीत करना, सम्मान के साथ पेश आना, उनके आदेशों का आज्ञा पालन करना, बाद मरने के उनके हक में दुआ करना उनके दोस्तों से अच्छा बर्ताव करना और भलीभांति पेश आना तौहीद (ईश्वर को एक मानना) के आदेश के फौरन बाद सद्व्यवहार और अच्छे आचार के आदेश ले आना, इस बात की दलील है कि खुदा के यहां बन्दों के हुकूक का कितना अधिक महत्व है।

(तफसीर माजिदी पृ. १५०, भाग–१)

पवित्र कुर्आन, अनुवाद : और नातेदारों को उसका हक (माल, गैरमाल) देते रहना, और मोहताज और मुसाफिर को भी देते रहना और (माल को) बेमौका मत उड़ाना, (क्योंकि) बेशक बे मौका उड़ाने वाले शैतानों के भाईबन्द ने है और शैतान अपने पालनहार का बड़ा नाशुकरा है। (सूरः बनी इस्राईल, आयतः २६,२७)

मआरिफुल कुर्आन में है :– इस आयत में आम रिश्तेदारों के हुकूक का बयान है कि हर रिश्तेदार का हक किया जाए जो कम से कम उनके साथ अच्छा जीवन व्यतीत करना और सद्व्यवहार है यदि वह जरूरत मन्द है तो अपनी हैसियत के अनुकूल उनकी माली सहायता करना भी इसमें शामिल है । इस आयत से इतनी बात तो साबित हो गई कि हर शख्स (व्यक्ति) पर उसके आम रिश्तेदारों अजीजों का भी हक है, वह क्या और कितना है? इसकी तफसील का ज़िक्र नहीं, मगर आम "सिल–ए–रहिमी और संबंधियों के साथ अच्छा व्यवहार करना। इसमें स्पष्ट है। इमाम आज़म अबूहनीफा रह० के नजदीक इसी आदेश के तहत जो रिश्तेदार खूनी रिश्ते से जुड़ा हो, अगर वह औरत या बच्चा है जिनके पास गुज़ारे (जीवन यापन) का सामान नहीं और कमाने की ताक़त नहीं, इसी तरह जो करीबी रिश्तदार अपाहिज या अन्धा हो और उसके पास अपना माल भी नहीं, जिससे उसका गुजारा होसके, तो उसके वह रिश्तेदार जिनके पास गुनजाइश (सामर्थ्य) है उसकी सहायता कर सकते हैं, उन पर उन सबका खर्चा अनिवार्य है, यदि एक ही श्रेणी के कई रिश्तदार सामर्थ्य रखते हों तो उन सब पर उसका खर्चा बराबर बराबर विभाजित करके नियुक्त किया जाएगा।

सूरः बकरा की आयत "व अलल वारिसे मिस्लु जालिक" से भी यह हुक्म साबित है।

उल्लेखनीय सूरः बनी इस्राईल आयत नं० २६,२७ में रिश्तेदार मिस्कीन (दरिद्र) मुसाफिर को माली सहायता देने और सिल–ए–रहिमी करने को उनका हक बता कर इस तरफ इशरा (संकेत) कर दिया कि देने वाले को उन पर एहसान जिताने का कोई मौका नहीं क्योंकि उनका हक उसके जिम्मे फर्ज है। देने वाला अपना फर्ज अदाकर रहा है किसी पर एहसान नहीं कर रहा है।

(मआरिफुल कुर्आन, पृ० ४७५ भाग–२) मुफ़्ती मु० शफी रह०

पवित्र कुर्आन अनुवाद : अतः नातेदार को उसका हक दो और मुहताज और मुसाफिर को भी यह अच्छा है उनके लिए जो अल्लाह की प्रसन्नता के इच्छुक हों और वही सफल हैं। सूरः रूम, आयत–३८

मआरिफुल कुर्आन में है : उक्त आयत में रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम को और हसन बसरी रह० के कहने के अनुकूल हर संबोधित इन्सान को जिसको अल्लाह ने माल में गुंजाइश दी हो यह आदेश दिया गया है कि जो माल अल्लाह ने आप को दिया है उसमें कन्जूसी न करो बल्कि उसको उनके खर्च करने की जगहों में खुशदिली (प्रसन्नचित) के साथ खर्च करो उससे तुम्हारे माल और तुम्हारे रिज़्क़ (जीविका) में कमी न आ जाएगी, और उस हुक्म (आदेश) के साथ इस आयत में माल के कुछ और मसारिफ़ (खर्च की जगहें) भी बता दी गईं, प्रथम ज़विल कुर्बा (नातेदार) दूसरे (निर्धन) तीसरे मुसाफिर, कि खुदा तआला के प्रदान किये हुए माल मे से उनके लोगों को दो और उन पर खर्च करो और साथ ही यह भी बतला दिया कि उन लोगों का हक है जो अल्लाह तआला ने तुम्हारे माल में शामिल कर दिया है इसलिए उनको देने के समय उन पर कोई एहसान न जितलाओ क्योंकि हक वालों का हक अदा करना न्याय के अनुकूल है, कोई एहसान और इनआम नहीं है।

और "जविल कुर्बा" का उद्देश सामान्य रिश्तेदार हैं वह रिश्तेदार करीबी हों अथवा दूर के – और हक का उद्देश भी आम अर्थात सामान्य है चाहे हुकूक वाजिबा (अनिवार्य अधिकार) है जैसे मां बाप, औलाद और दूसरे जविल अरहाम (करीबी रिश्ते) के हुकूक, अथवा एहसान और सद्व्यवहार हो जो रिश्तेदारों के साथ, दूसरों की तुलना में अधिक "सवाब" रखता है। यहां तक कि इमाम तफसीर मुजाहिद रह० ने फ़रमाया कि जिस शख्स (व्यक्ति) के "जविल अरहाम" रिश्तेदार मुहताज हों वह उनको छोड़कर दूसरों पर सदका करे तो अल्लाह के नजदीक मकबूल (मान्य) नहीं। और जबिल कुर्बा (रिश्तेदार) का हक़ केवल माली सहायता नहीं उनकी ख़बरगीरी (हाल मालूम करना) शारीरिक सेवा, और कुछ न कर सके तो कम से कम जबानी सहानुभूति दिलासा इत्यादि , जैसा कि हज़रत हसन रह० ने फरमाया कि "जविल कुर्बा" का हक उस व्यक्ति के लिये जिसको माली गुन्जाइश प्राप्त हो यह है कि माल से उनकी सहायता करे और जिस को यह गुन्जाइश न हो उसके लिए शारीरिक सेवा और जबानी सहानुभूति है। (मुआरिफुल कुर्आन मुफ़्ती मु० शफ़ी सा०)

पवित्र कुर्आन, अनुवाद : और जब बांटने के समय नातेदार और अनाथ और मुहताज उपस्थित हों तो उन्हें भी उसमें से (उनका हिस्सा) दे दो और उनसे भली भांति बात करो, सूर : निसा, आयत नं० ८

फवाइद उस्मानी में है : मीरास (मरनेवालोंका छोड़ा हुआ सामान और जायदाद) के बटवारे के समय बिरादरी और कुंबें के लोग इकट्ठा हो तो जो रिश्तेदार ऐसे हों जिनको मीरास में हिस्सा नहीं पहुंचता या जो अनाथ और मुहताज हों उनको कुछ खिला कर रूखसत करो, या कोई चीज तर्के में से आवश्यकतानुसार उनको भी दे दो, यह व्यवहार करना उचित है,यदि मीरास में से कुछ खिलाने या देने का अवसर न हो, जैसे यतीमों (अनाथों) का माल है। और मरने वाले ने वसीयत भी नहीं की तो उन लोगों से उचित बात करके रूखसत कर दो, अर्थात नर्मी के साथ अपनी मजबूरी बता दो कि यह यतीमों (अनाथों) का माल है और मैयत (मरनेवाले) ने वसीयत भीनहीं की इस लिए हम मजबूर हैं शुरू सूरत में वर्णन हो चुका है कि तमाम रिश्तेदार दरजा बदरजा व्यवहार के हकदार हैं और अनाथ और निर्धन भी,और जो रिश्तेदार अनाथ और निर्धन हों, उनके साथ अधिक रिआयत होनीचाहिए, इस लिए विरासत के बटवारे के समय जहां तक हो सके, उनको कुछ न कुछ देना चाहिए अगर किसी वजह से वारिस न हो तो सद्व्यवहार (हुस्न सलूक) से वंचित न रहे। (फवाएद उस्मानी)

पवित्र कुर्आन, अनुवाद : यदि तुम उल्टे फिर गए तो क्या तुम इसमें निकट हो कि धरती में बिगाड़ पैदा करो और अपने नातों–रिश्तों को काट डालो, (सूरः मुहम्मद आयत नं० २२)

आयत के अनुवाद का उद्देश्य यह है कि यदि तुम शरअ़ई आदेशों से उल्टे फिर गए जिनमें जिहाद का आदेश भी शामिल है, तो उसका प्रभाव यह होगा कि तुम जाहिलियत (इस्लाम से पूर्व) के पुराने तरीकों पर पड़जाओगे, जिसका आवश्यक परिणाम जमीन में फसाद (उपद्रव) और कतए अरहाम (रिश्तों का काटना) है, जैसा कि जाहिलियत के समय में होता था कि एक कबीला (गौत्र) दूसरे, कबीले पर चढ़ाई और कत्ल व गारत करता था, अपनी औलाद को खुद अपने हाथों जिन्दा दरगोर (जीवित हालत में दफन करना) कर देते थे। इस्लामे इन तमाम जाहिलियत की रीति रिवाजों को मिटाया।

इस्लाम ने रिश्तेदारी और

(शेष पृष्ठ १६ व १७ पर)

सय्यिदुना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

(हिन्दी लिपि में उर्दू)

तालिब हाशमी

सय्यिदुना हज़रत हुसैन, हज़रत अली और सय्यिदा फ़ातिमतुज्ज़हरा के दूसरे साहिबज़ादे हैं। (रज़ियल्लाहु अन्हुम) अबू अब्दुल्लाह उन की कुन्नियत और सय्यिद, शहीद, शब्बीर सिब्ते असग़र और रैहानतुन्नबी अल्क़ाब हैं। ३ या चार या पांच शअ़बान स० ४ हिज्री को मदीना मुनव्वरा में पैदा हुए। उनकी विलादत बा सआदत की ख़बर सुनकर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत फ़ातिमा के घर तशरीफ़ लाये और नौ मौलूद बच्चे के कान में अज़ान दी। फिर आपने सय्यिदा फ़ातिमा को अक़ीक़ा करने और बच्चे के बालों के हम वज़न चान्दी ख़ैरात करने के लिए इर्शाद फ़र्माया, उन्हों ने इर्शाद की तअमील की। वालिदैन ने बच्चे का नाम हर्ब रखा था, लेकिन हुज़ूर (स०) ने बदल कर हुसैन रखा।

सय्यिदुना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने तक़रीबन सात साल तक सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साय–ए–आतिफ़त में परवरिश पाई। दूसरे नवासे नवासियों की तरह हुज़ूर (स०) हज़रत हुसैन से भी ग़ैर मअमूली महब्बत करते थे।

सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बअ्द खलीफ़तुर्रसूल हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरूल मोमिनीन सय्यिदुना अुमर फ़ारूक़ भी हज़रत हुसैन को हमेशा निहायत अज़ीज़ जानते रहे। (रज़ियल्लाहु अन्हुम) हज़रत अुमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने बद्री सहाबा (रज़ि०) के लड़कों के वज़ीफ़े मुक़र्रर किये तो जहां दूसरे अस्हाबे बद्र के लड़कों का दो दो हज़ार (दिरहम) वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया वहां हज़रत अली (रज़ि०) और सय्यिदा फ़ातिमा के फ़र्ज़न्दों (हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि०)) का पांच पांच हज़ार वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया जो ख़ुद अस्हाबे बद्र के वज़ीफ़े के बराबर था। फ़ारूक़े अअ़ज़म (रज़ि०) ने उन्हें दूसरे लड़कों पर इस लिए तर्जीह दी कि वह उनके आक़ा व मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवासे थे।

एक मर्तबा यमन से बहुत से हुल्ले आए। हज़रत अुमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने उनको सहाबा में तक़सीम कर दिया। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत हसन(रज़ि०) और हज़रत हुसैन के हिस्से में कोई हुल्ला न आया। हज़रत अुमर फ़ारूक़ ने इस बात को शिद्दत से महसूस किया और यमन के हाकिम को हुक्म भेजा कि फ़ौरन दो हुल्ले और भेजो। जब तक यह हुल्ले न आ गये और हुस्नैन (रज़ि०) ने पहन न लिये हज़रत अुमर फ़ारूक़ बे चैन रहे। (बिलाज़री)

एक और रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अुमर फ़ारूक़ ने पहले हुल्लों को हुस्नैन के लाइक़ न समझा और यमन के हाकिम को फ़र्मान भेजा कि दो नये अुम्दा किस्म के हुल्ले भेजो। यह हुल्ले आये तो अमीरूल मोमिनीन ने हुस्नैन को पहनाये और बड़ी मसर्रत का इज़हार किया।

हज़रत हस्नैन कभी कभी हज़रत फ़ारूक़ के साथ तिफ़लाना शोख़ी की बातें भी कर लेते थे अमीरूल मोमिनीन इन बातों को बर्दाश्त करते थे और हज़रत हुसैन से टूट कर प्यार करते थे।

सय्यिदुना हज़रत अुस्मान (रज़ि०) के अहदे ख़िलाफ़त में स. ३० हि० में तबरिस्तान पर फ़ौजकशी हुई तो सय्यिदुना हज़रत हुसैन (रज़ि०) अपने ब्रादरे बुज़ुर्ग हज़रत हसन के साथ उसमें मुजाहिदाना शरीक हुए। हज़रत अुस्मान ज़ुन्नूरैन की ख़िलाफ़त के आख़िरी साल बाग़ियों ने काशान–ए–ख़िलाफ़त का मुहासरा किया तो हज़रत अली (रज़ि०) ने हज़रत हसन (रज़ि०) और हज़रत हुसैन (रज़ि०) को हज़रत अुस्मान की हिफ़ाज़त पर मामूर किया। उन्हों ने बअ़ज़ दूसरे असहाब के साथ मिल कर बाग़ियों को काशान–ए–ख़िलाफ़त के अन्दर घुसने से रोक रखा लेकिन बाग़ी दूसरी तरफ़ से दीवार फान्द कर अन्दर घुस गए और अमीरूलमोमिनीन सय्यिदुना हज़रत अुसमान (रज़ि०) को निहायत बे दर्दी से शहीद कर डाला।

अल्लामा जलालुद्दीन सीवती का बयान है कि हज़रत अली ने दोनों

भाइयों से बाज़ पुर्स की कि तुम्हारे होते हुए बाग़ी अन्दर कैसे घुस गये? उन्होंने जब वाक़िआ बयान किया तो हज़रत अ़ली एक आहे सर्द भर कर खामोश हो गये। हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वजहहू के अ़हदे ख़िलाफ़त में हज़रत हुसैन ने जंगे जमल और जंगे सिफ़्फ़ीन में अपने पिदरे गिरामी की तरफ़ से पुर ज़ोर हिस्सा लिया। जंगे सिफ़्फ़ीन के इल्तिवा के सिलसिले में हज़रत अ़ली (रज़ि०) और मुआ़विया (रज़ि०) के दर्मियान जो मुआ़हदा हुआ उस पर हज़रत हुसैन ने भी अपनी गवाही सबत की। उसके बअ़्द उन्होंने नहरवान में ख़वारिज के ख़िलाफ़ दादे शजाअ़त दी और उनकी सरकूबी में बड़ी सरगर्मी दिखाई।

स० ४०हि० में हज़रत अ़ली(रज़ि०) की शहादत के बअ़्द हज़रत हसन सरीर आराए ख़िलाफ़त हुए। चन्द माह बअ़्द उन्होंने अमीर मुआ़विया के हक़ में ख़िलाफ़त से दस्त बर्दारी का इरादा ज़ाहिर किया तो हज़रत हुसैन (रज़ि०) ने उसकी पुरज़ोर मुख़ालफ़त की लेकिन वह हज़रत हसन को अपना इरादा पूरा करने से रोकने में काम्याब न हुए। अमीर मुआ़विया (रज़ि०) के अ़हदे ख़िलाफ़त में स० ४६ हि० कुस्तुनतीनिया पर लशकर कशी हुई तो हज़रत हुसैन ने उसमें मुजाहिदाना शिरकत की। उसी ज़माने में उन्हें अपने बादरे बुज़ुर्ग हज़रत हसन (रज़ि०) की दाइमी मुफ़ारक़त का सदमा उठाना पड़ा।

अमीर मुआ़विया (रज़ि०) ने अपनी वफ़ात के कुछ अ़र्सा पहले यज़ीद को वली अ़हद बनाया और मदीना वालों से यज़ीद की बैअ़त लेना चाही तो हज़रत हुसैन और कुछ दूसरे अस्हाब यज़ीद की बैअ़त पर आमादा न हुए, ताहम यज़ीद ने उनसे चन्दां तआ़रूज़ न किया और उन्होंने अपनी वफ़ात से पहले यज़ीद को हज़रत हुसैन के बारे में यह वसीयत की :–

"मेरे बअ़्द अह्ले अ़िराक़ हुसैन को तुम्हारे मुक़ाबले में ज़रूर लायेंगे, जब वह तुम्हारे मुक़ाबले में खड़े हों और तुम को उन पर क़ाबू हासिल हो जाए तो दर गुज़र से काम लेना क्यों कि वह क़राबत दार, बड़े हक़दार और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अ़ज़ीज़ हैं। (तबरी)

यज़ीद तख़्ते हुकूमत पर बैठा तो उसने महसूस किया कि जब तक सय्यिदुना हज़रत हुसैन (रज़ि०) और सय्युदना हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) जैसी अहम और साहिबे असर शख्सीयतें उस की बैअ़त नहीं करेंगी उस की हुकूमत ख़तरे में रहेगी चुनांचि उसने मदीने के हाकिम वलीद बिन अ़ुत्बा को हुक्म भेजा कि इन दोनों बुज़ुर्गों से मेरी बैअ़त लो। यह दोनों बुज़ुर्ग उस वक़्त मदीने में मुक़ीम थे। वलीद ने उन्हें यज़ीद की बैअ़त की तर्ग़ीब दी तो उन्होंने इस मुआ़मले पर ग़ौर करने की मुहलत मांगी। वलीद ने मुहलत दे दी। इस दौरान में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) और सय्यिदुना हज़रत हुसैन (रज़ि०) अपने अहल व अ़याल समेत निहायत ख़ामोशी और राज़दारी के साथ मदीना मुनव्वरा से मक्का मुअज़्ज़मा चले गये। कुछ अ़र्से से कूफ़ा के लोग हज़रत हुसैन को ख़त पर ख़त लिख रहे थे कि आप कूफ़ा तशरीफ़ लाएं तो हम सब आप के हाथ पर बैअ़त कर लेंगे। सय्यिदुना हुसैन (रज़ि०) मक्का पहुंचे तो कूफ़ा वालों ने उन्हें अपनेयहां बुलाने के लिए ख़तों का तार बान्ध दिया। हज़रत हुसैन ने तहक़ीक़े अहवाल के लिए अपने चचा ज़ाद भाई हज़रत मुस्लिम बिन अ़क़ील(रज़ि०) को कूफ़ा भेजा।

वहां हज़ारों कूफ़ियों ने मुस्लिम के हाथ पर सय्यिदुना हुसैन की बैअ़त कर ली। मुस्लिम बिन अ़क़ील ने तमाम कैफ़ीयत हज़रत हुसैन (रज़ि०) को लिख भेजी। उन का ख़त मिलने पर सय्यिदुना हुसैन (रज़ि०) अपने अहले व अ़याल और जांनिसारों की एक मुख़तसर जमाअ़त के साथ मक्के से आ़ज़िमे कूफ़ा हो गये।

दूसरी तरफ़ यज़ीद को इन हालात का अ़िल्म हुआ तो उसने अ़ुबैदुल्लाह बिन ज़ियाद वालिये बस्रा को हुक्म भेजा कि तुम कूफ़ा की इमारत भी संभालो और ख़ुद कूफ़ा जा कर वहां के लोगों से मेरी बैअ़त लो। इब्नि ज़ियाद ने कूफ़ा पहुंच कर बड़ी सख़्ती से काम लिया। हज़रत मुस्लिम बिन अ़क़ील को गिरफ़्तार कर के शहीद करा दिया और अहले कूफ़ा से बज़ोर यज़ीद की बैअ़त ले ली। सय्यिदुना हुसैन रास्ते ही में थे कि उन्हें मुस्लिम बिन अ़क़ील की शहादत और कूफ़ियों की ग़द्दारी की इत्तिलाअ़ मिली लेकिन उन्होंने वापस जाना मुनासिब न समझा। हज़रत हुसैन अपने अहल व अ़याल और साठ सत्तर जां निसारों के साथ अर्ज़े नैनवा में पहुंचे तो ३, मुहर्रम स० ६१ हि०को कर्बला के मकाम पर इब्नि ज़ियाद के भेजे हुए शामी लशकर ने उन्हें घेर लिया। ७ मुहर्रम को शामी फ़ौज ने दरयाए फ़ुरात पर पहरे बिठा दिये ताकि सय्यिदुना हुसैन और उनके

रुफ़का दर्या से पानी न ले सकें।

१० मुहर्रम स० ६१ हि०को कर्बला का दिल दोज़ वाक़िआ पेश आया जिस में सय्यिदुना हुसैन (रज़ि०) ने अपने फ़र्ज़न्दों, भतीजों के साथ शामी लशकर के ख़िलाफ़ मर्दानावार लड़ते हुए शहादत पाई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

१२ मुहर्रम को तमाम पस्मान्दगान को (जिस में ख़वातीन बच्चे और बीमार ज़ैनुल आ़बिदीन भी थे) कूफ़ा ले जाया गया। जब यह क़ाफ़िला कूफ़ा पहुंचा तो हज़ारों कूफ़ी इनको देखने के लिए जमअ़ हो गये उस वक़्त हज़रत ज़ैनब (हज़रत हुसैन की बहन) ने फ़रमाया :

ऐ कूफ़ियो ! ऐ मक्कारो ! ऐ अ़हद शिकनो ! अपनी ज़बान से फिर जाने वालो। ख़ुदा करे तुम्हारी आखें हमेशा रोती रहें तुम्हारी मिसाल उस औरत जैसी है जो खुद ही सूत कातती फिर उसको टुकड़े टुकड़े कर देती है। तुम ने ख़ुद ही मेरे भाई से रिशत–ए–बैअ़त जोड़ा और फिर ख़ुद ही तोड़ डाला। तुम्हारे दिलों में खोट और कीना है। तुम्हारी फ़ितरत में झूठ और दग़ा है। ख़ुशामद, शैख़ी ख़ोरी और अ़हद शिकनी तुम्हारे ख़मीर में है। तुम ने जो कुछ आगे भेजा है वह बहुत बुरा है तुम ने ख़ैरूल बशर के फ़र्ज़न्द को जो जन्नत के जवानों के सरदार हैं क़त्ल किया है। ख़ुदा का क़हर तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहा है।

आह कूफ़ा वालो ! तुम ने एक बहुत बड़े गुनाह का इर्तिकाब किया है जो मुंह बिगाड़ देने वाला और मुसीबत में मुब्तला कर देनेवाला है। याद रखो तुम्हारा रब ना फ़रमानों की ताक में रहता है उसके यहां देर है अन्धेर नहीं।

यह गुफ़्तुगू सुन कर अक्सर कूफ़ियों की रोते रोते घिग्घी बन्ध गई।

दूसरे दिन कूफ़े के गवरनर इब्नि ज़ियाद ने दरबार मुनअ़क़िद किया। अहले बैत को उसके सामने पेश किया गया। मुख़तलिफ़ दिलदोज़ गुफ़्तुगूएं रहीं और जब इब्नि ज़ियाद ने हज़रत जैनुल आ़बिदीन के क़त्ल का हुक्म दिया तो हज़रत ज़ैनब बोलीं –

ऐ इब्नि ज़ियाद क्या तू अभी तक हमारे ख़ून से सेर नहीं हुआ? क्या इस नक़ाहत और बीमारी के मारे हुए बच्चे को भी मारेगा ? अगर इसे क़त्ल करना है तो इसके साथ मुझे भी मार डाल। यह कहकर वह ज़ैनुल आ़बिदीन से चिमट गईं। इब्नि ज़ियाद के दिल में कुछ ख़याल आ गया और हुक्म दिया कि इस लड़के को औरतों के साथ रहने को छोड़ दो।

इब्नि ज़ियाद ने शुहदा के सरों और असीराने अहले बैत को फौज के पहरे में यज़ीद के पास दमिश्क़ रवाना कर दिया। कूफ़ा से दमिश्क़ तक के तवील सफ़र की सऊ़बतें बर्दाश्त करने के बअ़्द यह क़ाफ़िला यज़ीद के दरबार में पेश किया गया वहां भी मुख़तलिफ़ गुफ़्तगूओं के बअ़्द हज़रत ज़ैनब ने निहायत बेबाकी से फ़रमाया :

ऐ यज़ीद गर्दिशे अफ़्लाक और हुजूमे आफ़ात ने मुझे तुझ से मुख़ातब होने पर मजबूर कर दिया याद रख रब्बुल अ़िज़्ज़त हम को ज़ियादा अ़र्से तक इस हाल में न रखेगा। हमारे मक़ासिद को ज़ायिअ़ न करेगा। तू ने हमें नुक़सान नहीं पहुंचाया अपने आप को नुक़सान पहुंचाया है। आह तेरे आदमियों ने दोशे रसूल के सवार और उसके भाइयों, फ़र्ज़न्दों और रुफ़का को बे दर्दी से ज़ब्ह कर दिया। उन्होंने पर्दानशीनाने अहले बैत की बेहुर्मती की, ऐ काश तू उस वक़्त शहीदाने कर्बला को देख सकता तो अपनी सारी दौलत व हशमत के बदले उनके पहलू में खड़ा होना पसन्द करता। हम अ़नक़रीब अपने नाना की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इन मसाइब को बयान करें गे जो तेरे बे दर्द हाथों से हमें पहुंचे हैं। और यह उस जगह होगा जहां औलादे रसूल (स०) और उनके साथी जमअ़ होंगे। उनके चेहरों का ख़ून और ख़ाक साफ़ की जाएगी। वहां ज़ालिमों से बदला लिया जाएगा। हुसैन (रज़ि०) और उनके साथी मरे नहीं अपने ख़ालिक़ के पास ज़िन्दा हैं और वही उनके लिए काफ़ी है। वह आ़दिले हक़ीक़ी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की औलाद और उनके साथियों को क़त्ल करने वालों से ज़रूर बदला लेगा। वही हमारी उम्मीद गाह है और उसी से हम फ़र्याद करते हैं।

सय्यिदा ज़ैनब का ख़ुत्बा सुनकर यज़ीद और उसके दरबारी सकते में आ गये यज़ीद को ख़ौफ़ महसूस हुआ कि कहीं लोग ख़ान्दाने रिसालत की हिमायत में मेरे ख़िलाफ़ न उठ खड़े हों, उसने ख़वातीने अहले बैत को अपने ख़ास हरम सरा में ठहराया और जहां तक हो सका उनकी दिल जूई की कोशिश की चन्द दिन बअ़्द उसने हज़रत नुअ़्मान बिन बशीर अन्सारी (रज़ि०) के ज़ेरे हिफ़ाज़त क़ाफ़िल–ए–अहले बैत को मदीना मुनव्वरा रवाना कर दिया। मदीना पहुंच कर हज़रत ज़ैनब और फ़ातिमा ने नुअ़्मान बिन बशीर को उनके हुस्ने

सुलूक के बदले में अपनी चूड़ियां पेश कीं तो नुअ़मान बिन बशीर अश्कबार हो गये और फ़रमाया :

ऐ बनाते रसूल (स०) ख़ुदा की क़सम मैंने जो कुछ किया है सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) के लिए,यह चूड़ियां आप को मुबारक हों।

सय्यिदुना ह़ज़रत ह़ुसैन ने मुख़तलिफ औक़ात में मुतअ़द्दिद शादियां कीं जिनसे मुतअ़द्दिद औलादें हुईं। औलादे नरीना में से सिर्फ़ एक अ़ली बिन हुसैन जो जैनुल आ़बिदीन के लक़ब से मशहूर हैं, बाक़ी बचे और उन्हीं से नस्ल चली। एक और नव जवान फ़र्ज़न्द अ़ली अक्बर और शीर ख्वार साह़िबज़ादे अ़ली अस्ग़र ने वाक़िअ–ए–कर्बला में शहादत पाई। बअ़्ज़ रिवायतों में है कि एक और फ़र्ज़न्द अब्दुल्लाह ने भी कर्बला में शहादत पाई। साह़िब ज़ादियों की तअ़्दाद अक्सर अहले सियर ने तीन बताई है, सकीना, फ़ातिमा और ज़ैनब।

सय्यिदुना ह़ज़रत ह़ुसैन ने ख़ानवाद–ए–नबवी में परवरिश पाई थी इस लिए मअ़दने फ़ज्ल व कमाल बन गये थे। चूंकि अ़हदे रिसालत में कमसिन थे इस लिए जनाब रिसालत मआ़ब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बराह रास्त सुनी हुई मर्वीयात की तअ़दाद सिर्फ आठ हैं अलबत्ता बिलवास्ता की तअ़दाद काफ़ी है। हुज़ूर के अ़लावा उन्होंने जिन बुज़ुर्गों से अह़ादीस रिवायत की हैं उनमें ह़ज़रत अ़ली, ह़ज़रत अ़ुमर फ़ारूक़, ह़ज़रत फ़ातिमा, ह़ज़रत हिन्द बिन हाला रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के अस्माए गिरामी काबिले ज़िक्र हैं। उनसे रूवाते ह़दीस में ब्रादरे बुज़ुर्ग, ह़ज़रत ह़सन (रज़ि०), साह़िब ज़ादे अ़ली ज़ैनुल आ़बिदीन, साह़िब ज़ादियां ह़ज़रत सक़ीना, ह़ज़रत फ़ातिमा, पोते ह़ज़रत मुह़म्मद बाक़िर, शअ़बी, अ़िकरमा, सिनान बिन अबी सिनान, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अ़ुस्मान और फ़र्ज़ूदक़ शाअ़िर वग़ैरह शामिल हैं।

तमाम अरबाबे सियर ने सय्यिदुना ह़ज़रत ह़ुसैन के कमाल का एअ़तिराफ़ किया है और लिखा है कि वह बड़े फ़ाज़िल थे। ह़ज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू क़ज़ा व इफ़्ता में बहुत बुलन्द मक़ाम रखते थे। सय्यिदुना ह़ज़रत ह़ुसैन ने उनके आगोशे तर्बियत में परवरिश पाई थी इस लिए वह भी मस्नदे इफ़्ता पर फाइज़ हो गये और अकाबिरे मदीनी मुश्किल मसाइल में उनकी तरफ़ रुजूअ़ किया करते थे। एक मर्तबा ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) ने उनसे पूछा कि क़ैदी को रिहा कराने का फ़र्ज़ किस पर आ़इद होता है। उन्होंने फ़रमाया जिस की तरफ़ से वह लड़ा हो एक और मौक़अ़ पर इब्नि ज़ुबैर ने उनसे इस्तिफ़सार किया कि शीर ख़्वार बच्चे का वज़ीफ़ा कब वाजिब होता है? उन्होंने फ़र्माया पैदाइश के फ़ौरन बअ़्द जब बच्चे के मुंह से आवाज़ निकलती है उस का वज़ीफ़ा वाजिब हो जाता है।

सय्यिदुना ह़ुसैन दीनी अ़ुलूम के अ़लावा उस अ़हद के अरब के मुरव्वजा अ़ुलूम में भी पूरी दस्तरस रखते थे। उनके तबह़हुरे अ़िल्मी, अ़िल्म व ह़िकमत और फ़साह़त व बलाग़त का अन्दाज़ा उनके ख़ुताबत से किया जा सकता है जिनमें से कुछ आज भी कुतुबे सियर में मह़फ़ूज़ हैं।

फ़ज़ाइले अख़लाक़ के एअ़तिबार से सय्यिदुना ह़ज़रत ह़ुसैन पैकरे मह़ासिन थे। अ़िबादत व रियाज़त उन का मअ़मूल था। काइमुल्लैल और साइमुन्नहार थे। फ़र्ज़ नमाज़ों के अ़लावा बकसरत नवाफ़िल पढ़ते थे। उनके फ़र्ज़न्द ह़ज़रत अ़ली ज़ैनुल आ़बिदीन का बयान है कि वह शब व रोज़ में एक एक हज़ार नफ़्ल नमाज़ें पढ़ डालते थे। रोज़े बकसरत रखते थे और सादा ग़िज़ा से इफ़्तार फ़रमाते थे। रमज़ानुल मुबारक में कम अज़कम एक मर्तबा क़ुर्आन पाक ज़रूर ख़त्म करते। ह़ज्ज भी बकसरत करते थे और वह भी आ़म तौर से पा पयादा। एक रिवायत के मुताबिक़ उन्होंने पचीस ह़ज्ज पा पयादा किये। (तहज़ीबुल अस्मा)

सय्यिदुना ह़ज़रत ह़ुसैन माली हैसीयत से निहायत आसूदा ह़ाल थे। ह़ज़रत अ़ुमर फ़ारूक़ ने अपने अ़हदे ख़िलाफ़त में पांच हज़ार माहाना वजीफ़ा मुक़र्रर किया था जो उन्हें ह़ज़रत अ़ुस्मान जुन्नूरैन के ज़माने तक बराबर मिलता रहा। सय्यिदुना ह़ज़रत ह़सन (रज़ि०) ने ख़िलाफ़त से दस्त बरदारी के वक्त अमीर मुआ़विया से उनके लिए दो लाख (दिर्हम) सालाना मुक़र्रर करवा दिये थे इस मुरफ़्फ़हुल ह़ाली के बावजूद उनकी ज़िन्दगी पर फ़क्र व ज़ुह़द का असर नुमायां था। अपना माल कसरत से राहे ख़ुदा में लुटाते रहते थे। कोई साइल उनके दर से ख़ाली न जाता था। बअ़्ज़ मर्तबा ग़ुरबा के घरों पर ख़ुद खाना पहुंचाते थे। अगर किसी क़र्ज़दार की सक़ीम ह़ालत का पता चलता तो ख़ुद उस का क़र्ज़ अदा कर देते थे।

एक दफ़अ़ नमाज़ में मशग़ूल थे कि गली में एक साइल की आवाज़

कानों में पड़ी। जल्दी जल्दी नमाज़ खत्म कर के बाहर निकले, सदा देने वाले साइल की खस्ता हाली देखी तो अपने ख़ादिम कंबर को आवाज दी। वह हाज़िर हुए तो पूछा, हमारे अखराजात में से कुछ बाकी रह गया है? क़ंबर ने जवाब दिया, आप ने दो सौ दिर्हम अहले बैत में तक्सीम करने के लिए दिये थे वह अभी तक्सीम नहीं किये गये हैं, फ़रमाया वह सारी रक़्म ले आओ अहले बैत से ज़ियादा एक मुस्ताहिक़ आ गया है। क़ंबर ने दो सौ दिर्हम लाकर पेश किये तो सब के सब साइल को दे दिये और साथ ही मअ़जिरत की कि इस वक्त मेरा हाथ खाली है, इस से ज़ियादा खिदमात नहीं कर सका।

सदक़ा खैरात के अलावा अहले अ़िल्म और शुअ़रा की सर परस्ती भी करते थे और उनको इनआ़म के तौर पर बड़ी बड़ी रक़्मों से नवाज़ते रहते थे। सय्यिदुना हुसैन की मजालिस वकार और मतानत का मुरक्क़अ़ होती थीं। लोग उनका हद से ज़ियादा इहतिराम करते थे और उनके सामने ऐसे सुकून और खामोशी से बैठते थे कि गोया उनके सरों पर परिन्दे बैठे हों। इस वकार और मतानत और बलन्दीये मर्तबत के बावजूद सय्यिदुना हुसैन तमकनत और खुद पसन्दी से कोसों दूर थे और बेहद ह़लीमुत्तबअ़ और मुन्कसिरूल मिजाज़ थे। निहायत कम हैसीयत के लोगों से भी खन्दा पेशानी से मिलते थे। एक मर्तबा किसी तरफ जा रहे थे, रास्ते में कुछ फुक़रा खाना खा रहे थे। उन्होंने ह़ज़रत हुसैन को देख कर अपने साथ खाने की दअ़वत दी। आप सवारी से उतर पड़े और फ़रमाया :

"बेशक अल्लाह तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं करता" फिर उन के साथ बैठकर खाना खाया। फ़ारिग़ हुए तो उन सब को दअ़वत पर बुलाया। जब वह लोग हाज़िर हुए तो आप ने घर वालों को हुक्म दिया कि जो कुछ ज़खीरा है वह सब भिजवा दो। अर्बाबे सियर ने सय्यिदुना ह़ज़रत हुसैन के बहुत से कलिमाते तय्यिबात नक्ल किये हैं जो दानिश व ह़िक्मत और पन्द व मौअ़िज़त का खजीना हैं। उनमें से कुछ यह हैं :–

१. जल्द बाजी नादानी है।(२) ह़िल्म ज़ीनत है। (३) सिल–ए–रहिमी निअ़मत है। (४) रास्तबाजी अ़िज्ज़त है। (५) झूट अ़ज्ज़ है (६) बुख़्ल इफ़लास है। (७) सखावत दौलतमन्दी है। (८) नर्मी अ़क्लमन्दी है। (९) राज़दारी अमानत है। (१०) हुस्ने खुल्क़ अ़िबादत है। (११) अ़मल तजरिबा है। (१२) इम्दाद दोस्ती है। (१३) अच्छे काम करते रहो मगर दिल से (१४) ऐसा काम जो तुम ने नहीं किया उस को शुमार न करो। (१५) हाजतमन्द ने तुम से सुवाल कर के अपनी आब्रू का ख़याल नरखा तो तुम उसकी हाजत रवाई करके अपनी आब्रू काइम रखो। (१६) जो अपने भाई की दुन्यावी मुसीबत में काम आया तो अल्लाह उसकी आखिरत की मुसीबत दूर करेगा। (१७) सब से अअ़ला मुआ़फ़ी देने वाला वह है जो बदला लेने की कुदरत रखता हो और फिर बदला न ले। (१८) अपनी ज़ियादा तअ़रीफ़ करना हलाकत का बाअ़िस है। (१९) अ़ता के ज़रीअ़े नेकनामी ह़ासिल करो। (२०) गुमराही से शुहरत न ह़ासिल करो। (२१) जो सख़ावत करता है सरदार बनता है, जो कंजूसी करता है ज़लील होता है। (२२) सब से ज़ियादा सखी वह है जो ऐसे लोगों को भी देता है जिन से मिलने की उम्मीद नहीं। (२३) जा किसी पर इह़सान करता है तो खुदा उस पर इह़सान करता है और खुदा इह़सान करने वालों को दोस्त बना लेता है। (२४) सब से ज़ियादा सिल–ए–रहिमी करने वाला वह शख्स है जो ऐसे शख्स से सिल–ए–रहिमी करे जिस ने उसके साथ सिल–ए–रहिमी न की हो। (२५) अगर किसी के साथ नेक सुलूक किया और दूसरा उसके साथ ऐसा न कर सका तो अल्लाह उसको नेक बदला देता है।

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण

फारम–४ नियम–८

प्रकाशन का स्थान	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, नदवतुल उलमा, बादशाहबाग, लखनऊ
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	अहाता दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	२१, अदनान पल्ली निकट हिरा पब्लिक स्कूल, रंग रोड, दुबग्गा, डाक घर, काकोरी, लखनऊ
मालिक का नाम	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

मैं, अतहर हसैन प्रमाणित करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

कुछ महत्वपूर्ण इस्लामी शहीदों की
शहादत की तारीख़ें

(हुज़ूर स० और हज़रत अबू बक्र की तारीखे वफ़ात भी)

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीख़े वफ़ात १२ रबीअुल अव्वल दिन सोमवार (दोशंबा) सन ११ हिज्री है।

पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात की तारीख़ २२ जुमादस्सानियः सन १३ हिज्री है।

दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की तारीख़ पहली मुहर्रम सन् २४ हिज्री है।

तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की तारीख़ १८ ज़िल्हिज्जः सन ३५ हिज्रीहै।

चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की तारीख़ १७ रमज़ान सन् ४० हिज्री है।

पांचवें ख़लीफ़ा हज़रत हसन (रज़ि०) की शहादत ज़ह्र (विष) के असर से २८ सफ़र सन् ५० हिज्री में हुई। अहले सुन्नत की किताबों में आप की शहादत की तारीख़ दर्ज नहीं है। यह तारीख़ शीआ हज़रात की क़िताब से ली गई है। आप ने रबीउल अव्वल सन ४० हिज्री में ख़िलाफ़त हज़रत मुआवियः (रज़ि०) के हवाले कर दी थी। एक हदीस की रू से ख़िलाफ़ते राशिदा ४० वर्ष है और आप की ख़िलाफ़त ४० वर्ष के भीतर है अतः आप भी ख़लीफ़–ए–राशिद हैं।

बद्र की लड़ाई १७ रमज़ान सन० २ हिज्री में हुई जिस में १४ सहाब–ए–किराम शहीद हुए थे। उनका दर्जा बहुत ऊंचा है। उहद की लड़ाई ७ शव्वाल सन० ३ हिज्री में हुई जिसमें ७० सहाब–ए–किराम ने शहादत पाई। इसी लड़ाई में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रिय चचा सय्यिदुश्शुहदा (सारे शहीदों के सरदार)हज़रते हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को भी शहादत मिली।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़बैर रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत जुमादल उख़रा सन० ७३ हिज्री में हुई।

मुहर्रम सन ६१ हिज्री में करबला की घटना घटी और १० मुहर्रम को हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु अपने ७० साथियों के साथ करबला के मैदान में शहीद कर दिये गये। इन शुहदा में हज़रत अबू तालिब के कुल (ख़ान्दान) के निम्न लिखित लोग शहीद हुए।

१. हज़रत हुसैन (रज़ि०), २. हज़रत जाफ़र, ३. हज़रत अब्बास, ४. हज़रत मुहम्मद, ५. हज़रत उसमान, ६. हज़रत अबू बक्र इन पर अल्लाह की रहमत हो। यह सभी हज़रात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे थे। यानी यह सब बाहम भाई थे।

७. हज़रत अली अकबर, ८. हज़रत अब्दुल्लाह (जो अभी दूध पीते थे गोद में थे) उन पर अल्लाह की रहमत हो यह दोनों हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे थे।

६. हज़रत अब्दुल्लाह, १०. हज़रत क़ासिम, ११. हज़रत अबू बक्र, यह तीनों हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे थे। इन सब पर अल्लाह की रहमत हो।

१२. हज़रत अब्दुर्रहमान, १३. हज़रत अब्दुल्लाह, १४. हज़रत जाफ़र, यह तीनों हज़रत अक़ील बिन अबी तालिब के बेटे थे यानी हज़रत हुसैन (रज़ि०) के चचा के बेटे थे। इन सब पर अल्लाह की रहमत हो।

१५. हज़रत अब्दुल्लाह यह हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील के बेटे थे यानी हज़रत हुसैन के चचा के पोते थे।

१६. हज़रत मुहम्मद यह अबू सईद बिन अक़ील के बेटे थे यानी हज़रत हुसैन के चचा के पोते थे।

१७. हज़रत औन, १८. हज़रत मुहम्मद यह दोनों हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र बिन अबीतालिब के बेटे थे यानी हज़रत हुसैन (रज़ि०) के सगे चचा के पोते थे।

हज़रत अक़ील के बेटे हज़रत मुस्लिम यानी हज़रत हुसैन के चचाज़ाद भाई पहले ही कूफ़ा में ८ ज़िल्हिज्जा (सन०६०) को शहीद कर दिये गये थे। अल्लाह तआला इन सारे शुहदा पर अपनी रहमत की बारिश करे।

यह जो मशहूर है कि हज़रत मुस्लिम के साथ दो छोटे बच्चे औन व मुहम्मद थे जो कूफ़ा में शहीद हुए।

यह सहीह नहीं है, यह दोनों भी करबला में शहीद हुए थे यह हज़रत मुस्लिम के साथ कूफ़ा नहीं गये थे।

●●●

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

मुईद अशरफ़ नदवी

● सऊदी अरब में राजनीतिक सुधार का अमल शुरू हो गया है और शाह फ़हद ने मुशावरती कौंसिल (शूरा) (परामर्श कौंसिल) को कानून बनाने सहित व्यापक अधिकार देने की स्वीकृति दे दी है।

शाह फ़हद ने एक फर्मान जारी किया है कि जिसमें शूरा को सऊदी शासकों की पूर्व आज्ञा के बिना कानून बनाने की अनुमति होगी। शूरा की आर्थिक कमेटी के सदस्य अब्दुल अज़ीज़ ने इसे उचित दिशा में महत्वपूर्ण क़दम बताया है। सऊदी हुकूमत पर राजनीतिक और आर्थिक सुधार करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय दबाव बढ़ रहा है और हाल ही में तब्दीली के हक़ में देश भर में प्रदर्शन भी हो चुके हैं। इस फैसले से पहले तक १२० सदस्यी शूरा केवल परामर्श देने की अधिकृत थी और उसे कानून बनाने का अधिकार नहीं था।

उत्तरी कोरिया ने आरोप लगाया है कि अमरीकी फौज ने उस के भूखण्ड में केवल नवम्बर महीने में १५० जासूसी उड़ाने भरी हैं। उसने वाशिंगटन पर आरोप लगाया है कि वह उत्तरी कोरिया को तबाह करने के लिए अवसर तलांश कर रहा है। उत्तरी कोरिया के फौजी सूत्रों ने कहा है कि अमरीका को यू–२, आर–सी–१२ और आरयफ–४ सी जासूसी हवाई जहाजों ने उड़ानें भरीं।

● फ्रांस के राष्ट्रपति जेल्सशिराक ने कहा है कि आवश्यक हो गया है कि स्कार्फ या किसी और धार्मिक वस्त्र पर क्लास रूम में पाबन्दी के लिए कानून बनाया जाए।

एलेंस में धर्माचार्यों से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि अगले तालीमी साल के प्रारम्भ से पहले अर्थात सितम्बर २००४ से पूर्व इस कानून पर कार्य प्रारम्भ हो जाएगा। उन्होंने कहा कि फ्रांस एक सेकुलर देश है और यहां सरकारी स्कूलों में इस्लामी पर्दा चाहे उसे कोई भी नाम दिया जाए उस पर पाबन्दी होना चाहिए क्योंकि यह कट्टरपन का पर्यावाची है। उन्होंने स्टासी कमेटी के विशेषज्ञों की सिफारिश पर अपने फैसले का स्पष्टीकरण करते हुए कहा कि कमेटी ने क्लास रूम में पाबन्दी पर सिफारिश की है। इस सिलसिले में कानून बनाया जाएगा। फ्रांसीसीराष्ट्रपति ने एक और कमेटी जिसने मुसलमानों के इदुलफित्र और यहूदियों से क्यूपूर पर छुट्टी की सिफारिश की है के बारे में कहा कि इस पर अमल करना सम्भव नहीं फिर भी किसी धार्मिक त्योहार पर पूर्व सूचना पर प्रबन्धक को आपत्ति नहीं होना चाहिए।

● संयुक्त राष्ट्र परिषद के सिक्रेटरी जनरल कूफीअन्नान ने कहा है कि इस्लाम को कुछ आतंकवादियों की कार्यवाहियों से सम्बध्य करना और फिर इस आधार पर फैसला गलत है। यह बात उन्होनें यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि व्यक्तिगत तौर पर विभिन्न होने के बावजूद पश्चिमी दृष्टिकोण और इस्लाम में सहमति पाई जाती है। उन्होंने कहा कि ग्लोब्लाइज़ेशन के कारण संसार भर में अमीर और ग़रीब के बीच अनवर बढ़ गया है। जिसके कारण उत्पीड़ित समाज में उग्रवादी सोच पाई जाती है।

चोट लगने या ज़ख़्म होने पर अस्ली शहद की पट्टी बांधने से ज़ख़्म जल्द भर जाता है।

गुले मक्सूद को दामन से भर दे

खैरुन्निसा बेहतर

जबां में या इलाही वह असर दे
कि जो चाहूं मैं तुझ से तू वह कर दे
रहे बाकी कोई हसरत न या रब
गुले मकसूद से दामन को भर दे
तसद्दुक़ में हबीबे मुस्तफ़ा के
मेरी सब मुश्किलें आसान कर दे
अता पर हो अता रहमत पे रहमत
मिरा घर निअ़मतो दौलत से भर दे
रहे ज़िन्दा मिरी औलाद या रब
तरक़्क़ी रिज़्क़ में शामो सहर दे
अगर जिन्दा रहूं तो मैं रहूं खुश
अगर मर जाऊं तो जन्नत में घर दे
तेरा मिलना बहुत आसान होवे
अगर अपना करम इक आन कर दे
जहां में जब तलक ज़िन्दा है बेहतर
सरापा खूबियों से उसको भर दे।